



MPEDA

समाचार पत्र

खंड 5 संख्या 7 फ़रवरी 2018

पृष्ठ 03

दिसंबर 2017
के दौरान यू एस श्रिम्प आयात

पृष्ठ 15

ब्लू स्विमिंग केकडा पोर्टुनस पेलाजिकस
पर चिरस्थायी परियोजना

पृष्ठ 20

‘शुचित्व सागरम’ समुद्र से प्लास्टिक
उन्मूलन पर परियोजना

www.mpeda.gov.in





CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.



CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

विषय सूची

खंड 5, संख्या. 7, फ़रवरी 2018

03

दिसंबर 2017 के दौरान यू एस श्रिम्प आयात

05

कोच्ची में आयोजित सफारी 2 एक्सपो के लिए ज़बरदस्त प्रतिक्रिया



15

ब्लू स्विमिंग केकड़ा पोर्टुनस पेलाजिकस पर चिरस्थायी परियोजना



19

समुद्री सुरक्षा पर सामुदायिक बातचीत कार्यक्रम



20

'शुचित्व सागरम' समुद्र से प्लास्टिक उन्मूलन पर परियोजना

24

निर्यात को बढ़ावा देने हेतु भुवनेश्वर में एमपीईडीए की उन्नत गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला



26

सशिमि ग्रेड ट्यूना के ऑनबोर्ड हैंडलिंग पर प्रशिक्षण

26

एमपीईडीए निर्यातोन्मुख जलकृषि फार्म के जीपीएस आधारित डेटाबेस की शुरुआत कर रहा है



28

'जलकृषि में पारिस्थितिकी चिरस्थाइता एवं विकासात्मक गुंजाइशों पर' प्रशिक्षण कार्यक्रम



38

तिलापिया ओडीशा के मत्स्य कृषकों को आकर्षित करती है



आवरण छवि : गोवा के गाँव में मत्स्यधन गतिविधि
फोटो : रजीश भास्करन

इस प्रकाशन के विद्वान लेखों में व्यक्त विचार लेखक के विचार हैं और एमपीईडीए के विचारों का गठन नहीं करते हैं। इस प्रकाशन के विद्वानों के लेखों में जानकारी की सटीकता की ज़िम्मेदारी लेखकों के साथ निहित है और न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय बोर्ड की जिम्मेदारी है।



संपादक मंडल

श्री टी. डोला शंकर, आईओएफएस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्रीमती आशा सी. परमेश्वरन
संयुक्त निदेशक (गु.नि.)

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के. वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विपणन संवर्धन)

डॉ. टी.आर. जिबिन कुमार (विकास एवं ए व आई) (प्रभारी)

संपादक
श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक
श्रीमती के.एम. दिव्या मोहनन
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय सुमर्थन
बिवेल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड
166, जवहर नगर, कडवन्ना,
कोच्चि, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट
रोबी अंबाड़ी



www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा मुद्रित और प्रकाशित (वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार) एमपीईडीए हाऊस, पनम्पिल्ली एवेन्यू, कोच्चि-682 036, फोन: +91 484 2311979

द्वारा प्रकाशित
एमपीईडीए हाऊस,
पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्चि-682 036

पर मुद्रित
प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्चि - 682 017



डॉ. जयतिलक, भा.प्र.से.
अध्यक्ष

प्रिय दोस्तों,

मुझे यह घोषणा करने में प्रसन्नता हो रही है कि एमपीईडीए ने दिनांक 19 फरवरी, 2018 को भुवनेश्वर में मत्स्य और मात्स्यकी उत्पादों में क्लोरम्फेनिकोल तथा नाइट्रोफुरान मेटाबोलाइट्स की जाँच हेतु अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ एक गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला का उदघाटन किया है। प्रयोगशाला को परीक्षण के लिए राष्ट्रीय मान्यता बोर्ड तथा अंशांकन प्रयोगशाला (एनएबीएल) से मान्यता और निर्यात निरीक्षण परिषद (ईआईसी) द्वारा अनुमोदन भी प्राप्त हुआ है। इस प्रयोगशाला द्वारा इन मानकों के लिए अन्य प्रयोगशालाओं की तुलना में बाज़ार दरों से कम दरों पर परीक्षण प्रदान करती है।

विशाखपट्टनम में आयोजित राज्य सरकार के सहभागी शिखर सम्मेलन 2018 कार्यक्रम के दौरान माननीय केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु और आंध्र प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन चंद्रबाबु नाइडु ने औपचारिक रूप से श्रिम्प कृषकों को एमपीईडीए नामांकन कार्ड का शुभारंभ किया। कृषकों के नामांकन कार्ड में एक निश्चित पहचान संख्या और त्वरित प्रतिक्रिया कोड होता है जिसमें नामांकित फार्मों की मूलभूत जानकारी होगी। नामांकन कार्ड जारी करना, कृषित समुद्री खाद्य की प्रभावी अनुमार्गनीयता क्रम प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदमों में से एक है। देश में फार्मों के अनुमार्गनीयता और गुणवत्ता नियंत्रण हेतु निर्यातानुमुख फार्मों के जीपीएस आधारित डेटाबेस विकसित करना एमपीईडीए की एक अनूठी पहल थी जोकि यह प्रयास उपभोक्ताओं के आत्मविश्वास को जीत सकता है।

ग्लोबफिश ने रिपोर्ट किया है कि वर्ष 2017 में जलकृषि ने 83.6 मी. टन के कुल पैदावार के साथ मत्स्य खाद्य आपूर्ति में अपने योगदान में वृद्धि जारी रखी। ग्लोबफिश के अनुमान के अनुसार वर्ष 2017 में कैप्चर मात्स्यकी उत्पादन 90.4 मी. टन पर स्थिर रहा। इस तथ्य को देखते हुए कि कैप्चर मत्स्य का एक महत्वपूर्ण अनुपात चारा उत्पादन के लिए उपयोग किया जाता है, मानव उपभोग के पूरक में जलकृषि का योगदान काफी अधिक है। इस रिपोर्ट में देश से श्रिम्प निर्यात द्वारा संचालित राजस्व वृद्धि के मामले में प्रमुख समुद्री खाद्य निर्यात के रूप में भारत को प्रमुख स्थान दिया है। अब उच्चतर समुद्री खाद्य निर्यातकों के बीच भारत चौथे स्थान पर है।

बाज़ार रिपोर्ट ने इस वर्ष प्रमुख उत्पादकों से उच्च श्रिम्प उत्पादन की भविष्यवाणी की है, जो इसकी माँग और मूल्य संरचना को प्रभावित कर सकता है। ऐसी स्थिति में, निर्यात आपूर्ति के लिए कच्चे प्रशीतित मर्दों को भेजने के बजाय मूल्यवर्धन की ओर ध्यान देना उचित है, ताकि कृषकों के साथ-साथ निर्यातकों के हित को भी उचित रूप से संभाल सकें।

हालांकि, एमपीईडीए ने अपने ऑनलाइन व्यापार पोर्टल में “फिश एक्सचेंज” में कृषकों को पंजीकरण करने और बिक्री के लिए पंजीकृत कृषकों के समक्ष अपने उत्पाद को रखने हेतु एक प्रावधान दिया है। यह अनुमार्गनीयता और आर्थिक लाभों को बेहतर बनाने में सहायक है, मध्यस्थों को लेनदेन से बाहर रखने के कारण किसानों और निर्यातक दोनों के लिए एक फायदे की स्थिति उत्पन्न करता है। कृषकों को ‘फिश एक्सचेंज’ पोर्टल में पंजीकृत और उनको अपने ऑर्डर देने हेतु एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालय के साथ-साथ नाक्सा के समन्वयकों से मार्गदर्शन एवं मदद मिलेगी। सभी कृषकों और निर्यातकों से अनुरोध है कि वे मत्स्य विनिमयन पोर्टल के मुफ्त व्यापार प्लैटफार्म का प्रभावी ढंग से उपयोग करें।

धन्यवाद।

दिसंबर 2017 के दौरान यू एस श्रिम्प आयात

दिसंबर 2016 के दौरान किए गए 14,315 मी. टन निर्यात के मुकाबले दिसंबर 2017 के दौरान, आयातित श्रिम्प 59,782 मी. टन से 10.7 प्रतिशत ऊपर थी। दिसंबर 2017 के दौरान भारत से अमेरिका के लिए आयातित श्रिम्प की अधिकतम मात्रा 18,980 मि. टन थी, जो कि 2016 के उकावले 14315 मे. टन थी। 2017 के कैलेंडर वर्ष में, यूएस ने 6,64,119 मी. टन श्रिम्प आयातित किया, जो वर्ष 2016 के 6,03,542 मी.टन से 10.04 प्रतिशत ऊपर था। वर्ष 2017 में आयातित श्रिम्प की अधिकतम मात्रा भारत से थी और यह वर्ष 2016 के 1,53,956 मी.टन के मुकाबले 2,13,963 मी.टन थी।

मीट्रिक टनों में दिसंबर 2017 के दौरान यूएस श्रिम्प निर्यात

देश का नाम	दिसंबर-16	दिसंबर-17	जनवरी-दिसंबर 2016	जनवरी-दिसंबर 2017
अर्जेंटीना	860	1,334	7,732	12,534
ऑस्ट्रेलिया	12	33	31	103
बांग्लादेश	516	105	4,102	1,294
बेलीज़	65	0	212	102
ब्राज़ील	0	0	8	0
ब्रूणै	0	0	26	1
बर्मा	17	4	174	299
कैनाडा	84	96	3,922	1,802
चिली	9	28	120	101
चीन	3,894	4,011	34,783	46,009
चीन - हाँग काँग	1	6	55	69
कोलंबिया	0	3	44	87
कोस्टा रिका	4	2	71	75
साइप्रस	0	0	19	0
डेनमार्क	1	3	83	45
एक्वाडोर	4,965	5,169	73,128	71,787
एल सल्वाडोर	2	6	25	31
घाना	0	0	0	9
ग्रीलैंड	0	0	2	21
ग्वोटीमाला	366	140	2,874	2,818
गुयाना	767	728	8,394	9,289
हैती	0	0	0	0
होण्डुरस	654	969	3,647	5,649
आइसलैंड	0	0	0	35
भारत	14,315	18,980	1,53,956	2,13,963
इन्डोनेशिया	9,212	10,815	1,17,108	1,18,033
इटली	0	0	0	16

विपणन समाचार

आईवरी कोस्ट	0	0	0	0
जमैका	0	0	0	0
जापान	1	1	2	3
मडगास्कर	0	0	28	0
मलेशिया	28	1	260	254
मेक्सिको	2,188	3,960	25,326	28,539
मोरक्को	0	0	1	0
नेथेर्लैंड्स	0	1	0	14
न्यू कालेडोनिया	0	0	24	18
न्यूजीलैंड	0	0	16	0
निकारागुआ	383	388	2,497	1,837
नैजीरिया	24	0	124	129
नॉर्वे	0	0	16	19
ओमान	0	0	0	3
पाकिस्तान	35	11	261	229
पनामा	413	225	3,066	2,623
पेरू	727	815	9,511	9,950
फिलिपेंस	271	337	2,158	2,560
पोर्तुगल	0	4	26	19
रशियन फ़ेडरेशन	0	0	1	0
सऊदी अरब	70	0	1,030	0
सेनेगल	0	0	28	11
सिंगापुर	0	0	1	1
दक्षिण कोरिया	19	12	121	97
स्पेन	0	1	69	82
श्रीलंका	27	3	171	168
सूरीनामे	47	19	474	379
स्वीडन	0	0	0	6
ताइवान	14	6	130	172
थायलैंड	8,822	6,656	81,152	74,552
यूनाइटेड अरब एमिरेट्स	14	75	233	383
यूनाइटेड किंगडम	0	0	0	0
वेनेजुला	266	169	2,903	2,076
वियतनाम	4,929	4,666	63,397	55,823
कुल	54,022	59,782	6,03,542	6,64,119

SOURCE: NOAA FISHERIES, OFFICE OF SCIENCE & TECHNOLOGY



कोच्ची में आयोजित सफारी 2 एक्सपो के लिए ज़बरदस्त प्रतिक्रिया



डॉ. त्रिलोचन मोहापात्र, डीजी, आईसीएआर के साथ डॉ. जे. के. जेना, डीडीजी (मात्स्यिकी), आईसीएआर और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सीएमएफआरआई द्वारा सफारी 2 एक्सपो के नेटफिश स्टॉल का संदर्शन।

दिनांक 15 से 17, जनवरी 2018 तक सीएमएफआरआई द्वारा रिमोट सेन्सिंग इमजेरी (सफारी) का उपयोग करके 'मात्स्यिकी एवं जलकृषि में सामाजिक अनुप्रयोग' पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान आयोजित प्रदर्शनी में एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग के साथ नेटफिश ने भी भाग लिया। स्टॉल में संदर्शकों के लिए समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र पर आधारित जानकारी देने वाले विभिन्न पोस्टर का प्रदर्शन और मत्स्य संरक्षण उपायों को चित्रित करने वाले विभिन्न हैंड आउट, अक्वापोनिक्स पर जानकारी आदि की व्यवस्था की गई थी। प्रदर्शनी को जनता से ज़बरदस्त प्रतिक्रिया मिली।

अल्बर्टियन अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा प्रदर्शनी 2018

दिनांक 4 से 6, जनवरी 2018 के दौरान सेंट आलबर्ट्स कॉलेज, एरणकुलम द्वारा कॉलेज परिसर में आयोजित 'अल्बर्टियन अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा प्रदर्शनी' में नेटफिश ने एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची के साथ संयुक्त रूप से एक स्टॉल स्थापित किया।

यह कार्यक्रम एमपीईडीए और नेटफिश के लिए समुद्री खाद्य की निर्यात के प्रचार हेतु अपनी विभिन्न गतिविधियों को लोकप्रिय बनाने के लिए एक अच्छा मंच साबित हुआ। स्टॉल में मत्स्य की स्वच्छ हैंडलिंग और मत्स्य संसाधनों का संरक्षण जैसे नेटफिश के विभिन्न जागरूकता पोस्टर प्रदर्शित किए। जरूरतमंदों के बीच वितरण के लिए अक्वापोनिक्स, मत्स्य का पौष्टिक मूल्य, मत्स्य हैंडलिंग प्रक्रियाओं, मत्स्यन संरक्षण उपायों आदि पर जानकारी वाले बोशर और लीफलेट स्टॉल में रखा।



आम जनता सफारी 2 एक्सपो में एमपीईडीए/नेटफिश स्टॉल में प्रदर्शित पोस्टर और पत्रक का जाँच करते हुए

गया कॉलेज के छात्रों के साथ-साथ पास के शैक्षिक संस्थानों के छात्रों ने स्टॉल का दौरा किया और उनमें से कई ने हमारी गतिविधियों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने में उत्साह दिखाया।



अल्बर्टियन एक्सपो में नेटफिश-एमपीईडीए स्टॉल का एक दृश्य



**Freight Brokers
Global Services**

The world within reach.



Looking to Export to the U.S.?

HOW CAN FBGS HELP YOU?

Let our dedicated team with decades of experience assist you



**National Customs
Brokerage**



**Domestic and International
Air Freight**



**FCL/LCL
Ocean Freight**



**Full Service, Inter-Modal
& LTL Trucking**



**Cold/Dry/Bonded
Warehouse & Distribution**



**Full Service FDA Security &
Compliance Consulting**

First Time Importer Assistance

- Bond and Licensing Assistance
- "Green Ticket Applications" & Monitoring
- FDA/USDA/Fish & Wildlife - OGA Compliance
- National Cold Storage Network
- ADD/CVD Monitoring & Refunds
- Reduced Duty Rates

LET'S GET STARTED!

Call: +91 98478 02324

Email: ExportUSA@FreightBrokersGlobal.com

कारवार में आयोजित 'करावली उत्सव 2017' में नेटफिश



△ स्टॉल में बिक्री के लिए रखे गए मूल्यवर्धित मत्स्यन उत्पाद

करावली उत्सव कर्नाटक के कारवार जिले का तीन दशकों पुराना त्योहार है, जिसे हर साल जिला प्रशासन द्वारा आयोजित किया जाता है। कन्नड में करावली का मतलब तटीय क्षेत्र है। 'करावली उत्सव 2017' कारवार के रवीन्द्रनाथ टैगोर बीच के जिला मुख्यालय में दिसंबर 8 से 10, 2017 तक आयोजित किया गया।

नेटफिश ने एनजीओ स्काॅडवस के सदस्य के तहत एक नेटफिश प्रशिक्षित महिला स्वयं-सहायता-समूह गुलाबी स्वसहाया संघ की भागीदारी के साथ एक स्टॉल लगाया। यह समूह छोटे पैमाने पर सूखा मत्स्य उत्पाद सहित मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पादों का उत्पादन एवं बिक्री करता है। उक्त समूह के सभी सदस्य, स्काॅडवस के फील्ड पर्यवेक्षक के पर्यवेक्षण में विभिन्न मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पादों को तैयार किया और उत्सव के पहले नेटफिश और स्काॅडवस लोगो वाले खाद्य ग्रेड वाले प्लास्टिक पैकेट में उन्हें पैक किया।



△ करावली उत्सव में नेटफिश स्टॉल में सार्वजनिक प्रतिक्रिया

नेटफिश स्टॉल में प्रोन चटनी पाउडर, क्रोकर चटने पाउडर, एंचोवी चटनी पाउडर, मैकरेल चटनी पाउडर और सूखे शार्क मोल्स जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों को बिक्री हेतु आकर्षक ढंग से व्यवस्थित रखा गया था। अच्छी भारी संख्या में लोगों ने नेटफिश स्टॉल का दौरा किया और मत्स्य उत्पादों के प्रति बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाई दी जिसके द्वारा तीन दीवसीय त्योहार के दौरान बेहतर आय प्राप्त की गयी। कई लोगों ने स्थाई रूप से स्टॉल लगाने का आग्रह किया ताकि वे त्योहार के बाद भी इस तरह के उत्पाद प्राप्त कर सकें।

राज्य में नेटफिश और स्काॅडवस द्वारा संयुक्त रूप से किए गए विभिन्न गतिविधियों पर जानकारी देने वाले पोस्टर भी स्टॉल में

प्रदर्शित किए गए थे और जरूरतमंदों के बीच मात्स्यकी के गुणवत्ता प्रबंधन और संरक्षण पर पुस्तिकाएँ वितरित की गईं।

स्टॉल में हिन्दी और कन्नड में नेटफिश वृत्तचित्रों और एनिमेशन फिल्मों को भी दिखाया गया, जिसने भीड़ को आकर्षित किया। महिला-स्व-सहायता समूह के सदस्यों ने अपने उत्पादों को बेचने के लिए करावली त्योहार में भाग लेने का अवसर प्रदान करने हेतु नेटफिश और स्काॅडवस के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया, जो उनके लिए ऐसे उत्पादों का उत्पादन करने लिए अत्यंत प्रोत्साहनजनक है।

जनवरी 2018 के दौरान भारत के चयनित बंदरगाहों में समुद्री मत्स्य की लैंडिंग की मुख्य विशेषताएँ

हनुमंत राव, वी.वी. अफ़सल, एन.जे.नीतु और जोईस वी. तोमस

नेटफिश- एमपीईडीए

भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटों के साथ-साथ प्रमुख मत्स्यन बंदरगाहों में नाव आगमन और फिश लैंडिंग की जानकारी एमपीईडीए के कैच प्रमाणन प्रणाली के हिस्से के रूप में नेटफिश द्वारा रिकार्ड किया जाता है। नेटफिश देश के 9 समुद्र तटीय राज्यों के 46 प्रमुख बंदरगाहों और लैंडिंग केन्द्रों (तालिका 1) में नाव आगमन और मत्स्य लैंडिंग रिकार्ड करके भारतीय तट में समुद्री मत्स्य कैचर का मॉनिटरिंग करते हैं। एकत्रित लैंडिंग आँकड़ों का मूल्यांकन एमएस ऑफिस (एक्सेल) का उपयोग करके प्रजाति-वार, राज्य-वार, क्षेत्र-वार और बंदरगाह-वार के आधार पर संसाधित किया जाता है। जनवरी 2018 के दौरान भारत के प्रमुख बंदरगाहों में हुए समुद्री मत्स्य लैंडिंग के बारे में इस रिपोर्ट पर प्रकाश डाला है।

तालिका 1. डेटा संग्रह के लिए चयनित बंदरगाहों और लैंडिंग केन्द्रों की सूची

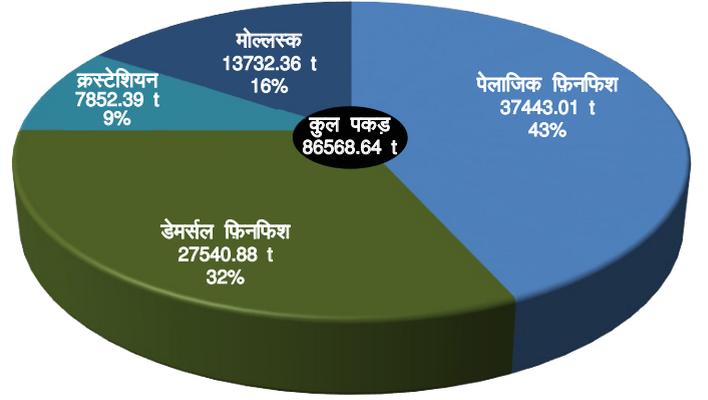
क्रम सं.	राज्य	मत्स्यन बंदरगाह
1	केरल	बेयपोर
2		पुतियाप्पा
3		तोपुंपड़ी
4		मुनंबम
5		शक्तिकुलंगरा
6		तोट्टप्पल्ली
7		कायमकुलम
8		विषिंजम
9	कर्नाटक	मैंगलोर
10		मालपे
11		गंगोली
12		तद्री
13		कारवार
14	महाराष्ट्र	हर्णे
15		न्यू फेरी वार्फ
16		रत्नागिरी (मिरकरवाड़ा)
17		ससून डॉक

18	गुजरात	वेरावल
19		पोरबंदर
20		मंग्रोल
21	पश्चिम बंगाल	डिघा (शंकरपुर)
22		देशप्राण
23		नमखाना
24		सुल्तानपुर
25		ककद्वीप
26		राइडिगी
27	ओड़ीशा	पारादीप
28		बलरामगड़ी
29		बहाबलापुर
30		धमारा
31	आंध्र प्रदेश	काक्किनाडा
32		मछलीपट्टनम
33		निर्जांपट्टनम
34		विशाखपट्टनम
35	तमिल नाडु	चेन्नई
36		पषियार
37		नागपट्टिनम
38		तूत्तिकोरिन
39		कडलूर
40		मंडपम
41		कोलच्चल
42		पांडेचरी
43		कारैक्कल
44		चिन्नमोट्टम
45	गोआ	कटबोना
46		मालिम

संकेंद्रित क्षेत्र

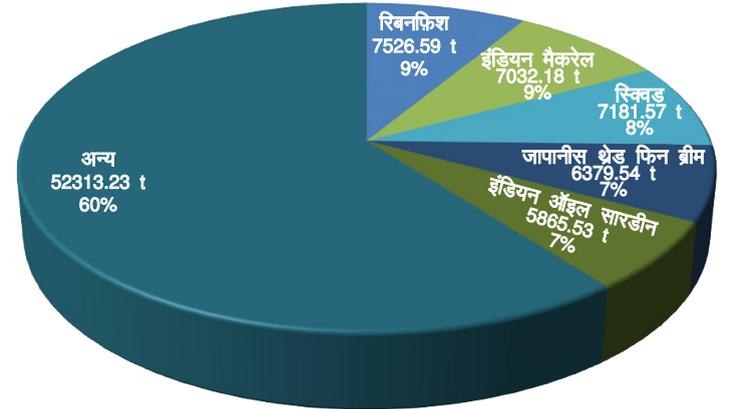
मत्स्य लैंडिंग पर आधारित अनुमान

जनवरी 2018 के दौरान 46 अवतरण स्थानों से कुल 865668.64 टन का समुद्री मत्स्य संसाधनों का अवतरण दर्ज किया था, जिनमें से 37443.01 टन (43%) पेलाजिक फिनफिश संसाधन, 27540.88 टन (32%) डेमर्सल फिनफिश, 13732.36 टन (16%) मोल्लस्कस और 7852.39 टन (9%) के क्रस्टेशियन किस्म शामिल हैं। (चित्र 1)



चित्र 1: जनवरी 2018 के दौरान श्रेणी-वार मत्स्य अवतरण

महीने के दौरान दर्ज की गई मत्स्य मदों की 109 किस्मों की अवतरण के अंतर्गत कालक्रमिक आधार पर सर्वोच्च पाँच योगदानकर्ता थे, रिबनफिश, इंडियन मैकरेल, स्विड, जापानीस थ्रेडफिन ब्रीम और इंडियन ऑइल सारडीन (चित्र 2), जिसमें पकड़ कुल का 40% का गठन किया। इस अवधि के दौरान दर्ज की गई रिबनफिश लैंडिंग 7526.59 टन (कुल पकड़ का 9%) था और यह प्रजाति जिन्होंने अधिकतम लैंडिंग दर्ज किया था। उपरोक्त सूचीबद्ध 5 मत्स्य वस्तुओं के अलावा, कुल पकड़ के अन्य प्रमुख योगदानकर्ता थे, कट्टलफिश और डस्की फिंड बुल्स आई, जिसने क्रमशः 5062.95 टन और 4959.13 टन का हिस्सा पंजीकृत किया। सफेद स्नैप्पर किस्म ने महीने के दौरान सबसे कम मात्रा दर्ज की गई थी (0.30 टन)।



चित्र 2 : जनवरी के दौरान अवतरण किए गए मुख्य मद्

जनवरी 2018 के दौरान रिकार्ड की गई विभिन्न मत्स्यन मदों के श्रेणीवार मात्रा तालिका 2 में दी गई है। पेलाजिक फिनफिश संसाधनों में से, रिबनफिश ने उच्चतम लैंडिंग रिकार्ड की जिसके बाद इंडियन मैकरेल और इंडियन ऑइल सारडीन थे। डेमर्सल फिनफिश के मामले में, प्रमुख योगदानकर्ता बुल्स आई, जापानी थ्रेडफिन ब्रीम और क्रोकर्स थे। मोल्लस्कन स्टॉक में स्विड, कट्टलफिश और ऑक्टोपस ने शेलफिश लैंडिंग का 64% का गठन किया शेष क्रस्टेशियन थे। क्रस्टेशियनों में, पीनिड श्रिम्प सबसे प्रमुख योगदानकर्ता थे, जिसमें सबसे ज़्यादा हिस्सा करिक्काड़ी श्रिम्प का था (2070.92 टन)।

तालिका 2 : जनवरी 2018 के दौरान विभिन्न मत्स्यन मदों की श्रेणीवार अवतरण

मत्स्य मद्	मात्रा टनों में	कुल पकड़ %
पेलाजिक फिनफिश		
रिबन फिश	7526.59	8.69
इंडियन मैकरेल	7302.18	8.44
इंडियन ऑइल सारडीन	5865.53	6.78
ट्यूना	4209.77	4.86
सीर फिश	2346.04	2.71
एंचोवी	2164.94	2.50
स्काइस	1318.90	1.52
हॉर्स मैकरेल	1254.94	1.45

डोलफिन फिश	1154.39	1.33
बारक्यूडा	896.06	1.04
ट्रेवल्लस	620.34	0.72
लेस्सर सारडीन	606.88	0.70
बॉम्बे डक	558.64	0.65
हेरिंग	245.72	0.28
क्वीन फिश	207.51	0.24
लेथर जैकेट	190.31	0.22
मुल्लेट	140.88	0.16
इंडियन थ्रेड फिश	138.80	0.16

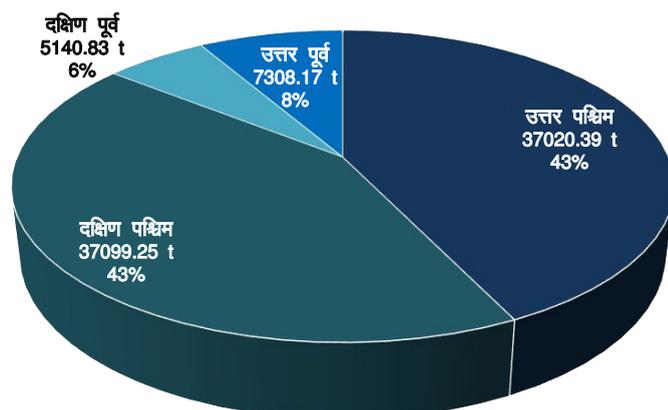
संकेंद्रित क्षेत्र

इंडियन इलिषा	104.55	0.12
कोबिया	97.10	0.11
मरलिन्स	85.43	0.10
नीडिल फिश	83.30	0.10
ओरिएंटल बोनिटो	69.40	0.08
हिल्सा	66.94	0.08
फ्लॉट नीडिल फिश	55.96	0.06
इंडियन साल्मन	46.09	0.05
सेल फिश	39.60	0.05
सी बास	29.00	0.03
सिल्वर सिल्लागो	9.65	0.01
रईनबो रत्रर	7.09	0.01
मिल्क फिश	0.50	0.00
कुल पेलाजिक	37443.01	43.25
डेमर्सल फिनफिश		
बुल्स आई	6908.33	7.98
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	6379.54	7.37
क्रोकर्स	3460.80	4.00
सोल फिश	2665.51	3.08
लिज़ार्ड फिश	2122.48	2.45
कैट फिश	1690.78	1.95
रीफ कोड	1559.38	1.80
स्नैप्पर	1073.13	1.24
पॉफ्रेट	682.98	0.79
मून फिश	270.30	0.31
पोनी फिश	218.28	0.25
ईल	150.98	0.17
गोट फिश	146.02	0.17
रेस	100.87	0.12
टैगर पेर्च	22.24	0.03
एम्परर ब्रीम	20.72	0.02
ग्लास्सी पेर्च	15.73	0.02
इंडियन हालिबट	14.54	0.02
घोल	14.41	0.02
पैरट फिश	7.00	0.01
व्हिपफिन सिल्वर बिड्डी	6.85	0.01
बाटफिश	3.41	0.00

ब्लाक टिप शार्क	3.10	0.00
फाइल फिश	2.00	0.00
येल्लो फिन सी ब्रीम	1.55	0.00
कुल	27540.88	31.81
शेलफिश		
क्रस्टेशियन		
पीनिड थ्रिम्प	7183.60	8.30
समुद्री केकड़ा	625.84	0.72
कीचड़ केकड़ा	21.23	0.02
लॉब्सटर	17.22	0.02
गैर पीनिड थ्रिम्प	4.50	0.01
कुल क्रस्टेशियन	7852.39	9.07
मोलस्क		
सक्विड	7181.57	8.30
कट्टलफिश	5062.95	5.85
ऑक्टोपस	1487.84	1.72
कुल मोलस्क	13732.36	15.86
कुल शेलफिश	21584.75	24.93
कुल योग	86568.64	100.00

क्षेत्र-वार अवतरण

अवतरण आंकड़े का क्षेत्र-वार आकलन करने पर यह पाया गया कि दक्षिण पश्चिम तट (केरल, कर्नाटक और गोआ के 15 चयनित बंदरगाहों सहित) ने 37,099.25 टन (43%) की अधिकतम अवतरण रिकार्ड की और इसके बाद उत्तर पश्चिम क्षेत्र (महाराष्ट्र और गुजरात तटों के चयनित 7 अवतरण स्थान सहित) 37020.39 टन (43%) (चित्र 3) रिकार्ड की।



▲ चित्र 3: जनवरी 2018 के दौरान रिकार्ड किया गया क्षेत्र-वार अवतरण

संकेंद्रित क्षेत्र

तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के 13 बंदरगाहों में से किए गए अवतरण दक्षिण पूर्व क्षेत्र के लिए आंकड़ा बनाया, जहाँ कुल 5140.83 टन (कुल पकड़ का केवल 6%) रिकार्ड किया गया। उत्तर पूर्व क्षेत्र में ओड़ीशा और पश्चिम बंगाल के 10 चुनी हुई अवतरण स्थानों में 7308.17 टन (8%) की मात्रा रिकार्ड की गई।

दक्षिण पश्चिम और उत्तरी पूर्व तटों में पेलाजिक फिनफिश अवतरण अन्य 2 श्रेणियों की तुलना में काफी अधिक थी, जबकि उत्तर पश्चिम में, डेमर्सल फिनफिश स्टॉक ने पेलाजिक फिनफिश और शेलफिश की तुलना की मात्रा में अधिक रिकार्ड किया गया। (चित्र 4) दक्षिण पूर्व में, शेलफिश संसाधनों द्वारा अवतरण का प्रभुत्व था। दक्षिण पूर्व को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में शेल फिश अवतरण सबसे कम थी।

पाँच प्रमुख मत्स्यन मद जिसने मुख्य रूप से प्रत्येक क्षेत्र में अवतरण में विशिष्ट योगदान दिया था, इसका विवरण तालिका 3 में दिया गया है।



चित्र 4: प्रत्येक क्षेत्र के कुल अवतरण के श्रेणीवार योगदान (टनों में) की तुलना

तालिका 3. जनवरी के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में अवतरण किया गया प्रमुख मद

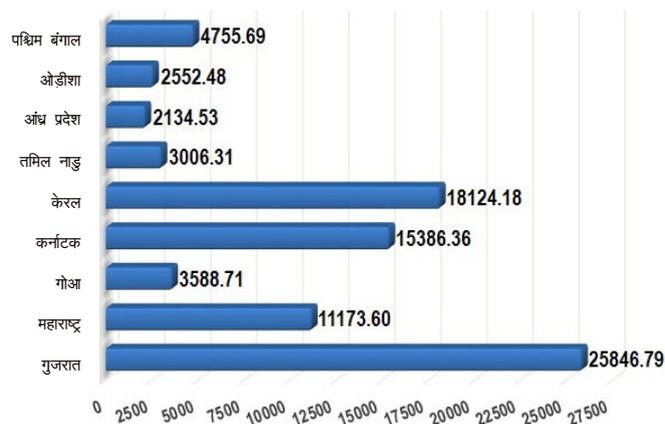
मद	मात्रा टनों में	क्षेत्र के कुल लैंडिंग %
दक्षिण पश्चिम		
इंडियन मैकरेल	5141.47	13.86
इंडियन ऑइल सारडीन	5133.74	13.84
जापानीस थ्रेडफिन ब्रीम	3502.97	9.44
स्क्वड	3176.81	8.56
कट्टलफिश	1611.78	4.34
उत्तर पश्चिम		
रिबनफिश	5342.27	14.43
बुल्स आई - डेस्की फिंड	4403.10	11.89
स्क्वड	3509.19	9.48
कट्टलफिश	2716.96	7.34
जापानीस थ्रेडफिन ब्रीम	2647.30	7.15
दक्षिण पूर्व		
ट्यूना	534.66	10.40
कट्टलफिश	495.43	9.64
रिबनफिश	375.83	7.31
व्हाइट प्रोन	282.95	5.50
स्क्वड	279.37	5.43
उत्तर पूर्व		
क्रोकर	1004.58	13.75
गोल्डन एंचोवी	597.73	8.18

संकेंद्रित क्षेत्र

इंडियन ऑइल सारडीन	563.48	7.71
रिबनफिश	519.72	7.11
करिक्काडी श्रिम्य	378.27	5.18

राज्य-वार अवतरण

भारत की मुख्य भूमि के 9 समुद्र तटीय राज्यों में से, गुजरात राज्य ने महीने के दौरान अधिकतम समुद्री मत्स्य अवतरण रिकार्ड किया, जो 25,846.79 टन की कुल पकड़ के लगभग 30% था (चित्र 5)। गुजरात के बाद केरल राज्य ने 18124.18 टन का योगदान दिया जो सभी राज्यों द्वारा रिकार्ड की गई कुल मात्रा के लगभग 21% था। कुल अवतरण के 15386.36 टन (18%) के साथ कर्नाटक तीसरी स्थान पर रही। पश्चिमी तट के राज्यों ने संयुक्त रूप से कुल पकड़ के 85% का गठन किया। पूर्वी तट में, 4755.69 टन (5%) की सबसे सर्वोच्च अवतरण पश्चिम बंगाल ने रिकार्ड किया। महीने के दौरान सबसे कम अवतरण रिकार्ड किया गया राज्य आंध्र प्रदेश था जहाँ से केवल 2134.53 टन के समुद्री मत्स्य पकड़ रिकार्ड की गई थी।



जनवरी के दौरान प्रत्येक राज्य में प्रमुख पाँच मत्स्यन मदों ने लैंडिंग में महत्वपूर्ण योगदान दिया था, जिसका विवरण तालिका 4 में दिया जाता है।

▲ चित्र 5 : जनवरी 2018 के दौरान हुए राज्य-वार मत्स्य अवतरण (टनों में)

तालिका 4. जनवरी 2018 के दौरान विभिन्न राज्यों में अवतरण किया गया प्रमुख मद

मद	मात्रा टनों में	राज्य के कुल अवतरण %
केरल		
जापानीस थ्रेडफिन ब्रीम	2112.62	11.66
इंडियन ऑइल सारडीन	2001.97	11.05
स्क्वड	1408.10	7.77
कट्टलफिश	1163.66	6.42
इंडियन मैकरेल	1018.97	5.62
कर्नाटक		
इंडियन मैकरेल	3002.45	19.51
इंडियन ऑइल सारडीन	2548.67	16.56
स्क्वड	1482.01	9.63
जापानीस थ्रेडफिन ब्रीम	1369.96	8.90
बुल्स आई- डेक्सी फिड	590.63	3.84
गोआ		
इंडियन मैकरेल		
इंडियन ऑइल सारडीन	1120.05	31.21
लिटिल टर्नी	583.10	16.25
ट्यूना	408.40	11.38
स्क्वड	361.29	10.07
स्क्वड	286.70	7.99
महाराष्ट्र		
इंडियन मैकरेल	984.73	8.81
हॉर्स मैकरेल	965.87	8.64
स्क्वड	960.39	8.60
क्रोकर	904.59	8.10
रिबनफिश	894.27	8.00
गुजरात		
रिबनफिश	4448.00	17.21
बुल्स आई- डेक्सी फिड	4403.10	17.04
स्क्वड	2548.80	9.86
कट्टलफिश	2293.90	8.87
जापानीस थ्रेडफिन ब्रीम	2149.50	8.32

संकेंद्रित क्षेत्र

तमिलनाडु		
कट्टलफिश	467.71	15.56
स्क्वड	252.70	8.41
ट्यूना	205.17	6.82
इंडियन ऑइल सारडीन	141.49	4.71
इंडियन मैकरेल	120.06	3.99
आंध्र प्रदेश		
ट्यूना	329.49	15.44
रिबनफिश	286.41	13.42
व्हाइट प्रोन	212.19	9.94
ब्राउन श्रिम्प	198.87	9.32
पिंक श्रिम्प	186.97	8.76
ओड़ीशा		
क्रोकर	514.83	20.17
गोल्डन एंचोवी	253.42	9.93
रिबनफिश	243.95	9.56
सोल फिश	184.08	7.21
जापानीस थ्रेडफिन ब्रीम	170.62	6.68
पश्चिम बंगाल		
क्रोकर	489.748	10.30
इंडियन ऑइल सारडीन	479.192	10.08
गोल्डेन एंचोवी	344.311	7.24
बॉम्बे डक	327.804	6.89
इंडियन मैकरेल	296.240	6.23

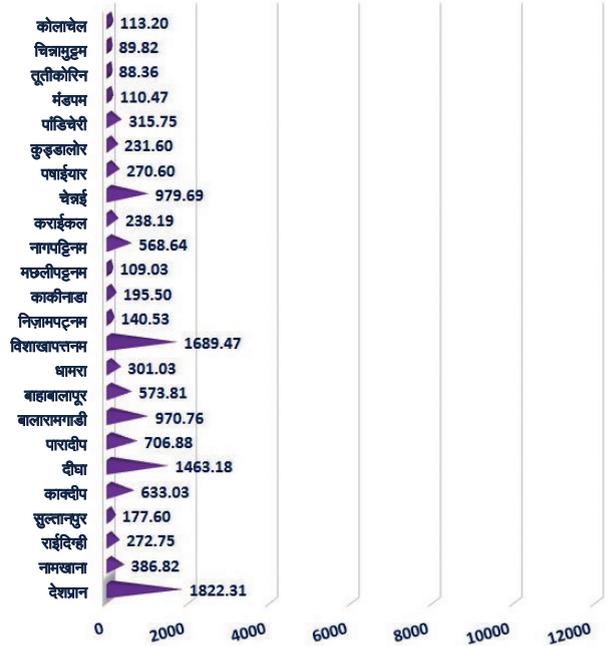
बंदरगाह-वार अवतरण

पश्चिम और पूर्वी तटों के साथ चयनित बंदरगाहों में महीने के दौरान रिकार्ड की गई मत्स्य अवतरण क्रमशः 6 और 7 आंकड़े के रूप में प्रस्तुत की जाती है। 46 बंदरगाहों में से केरल के बेपूर बन्दरगाह ने 10888.50 टन (13%) की अधिकतम अवतरण रिकार्ड की और इसके बाद गुजरात के वेरावल बंदरगाह ने 10539.70 टन (12%) के योगदान के साथ पंजीकृत हुआ। गुजरात के पोरबंदर बंदरगाह ने 9135.95 टन (11%) की मात्रा रिकार्ड की और कर्नाटक के मैंगलोर बंदरगाह ने 7048.87 टन (8%) के साथ अनुवर्ती स्थानों में रही। पूर्वी तट में, सर्वोच्च अवतरण दर्ज करने वाला बंदरगाह पश्चिम बंगाल के देशप्राण था जहाँ 1822.31 टन (2%) अवतरण किया गया। पश्चिम तट के चयनित 22 बंदरगाहों में से पंद्रह ने 1000 टन से अधिक पकड़ दर्ज की है जबकि पूर्वी तट के

24 बंदरगाहों में से केलवाल 3 ने 1000 टन से ज्यादा पकड़ दर्ज की गई है। केरल के विषिजम बंदरगाह ने सबसे कम अवतरण (31.14 टन) रिकार्ड किया।



चित्र 6 : जनवरी 2018 के दौरान पश्चिमी तट सहित के बंदरगाहों पर अवतरण (टनों में)



चित्र 7 : जनवरी 2018 के दौरान उत्तरी तट सहित के बंदरगाहों पर अवतरण (टनों में)

नाव आगमन पर आधारित अनुमान

जनवरी 2018 के दौरान कुल 33568 नाव आगमन दर्ज किए गए, जिनमें से सबसे अधिक 4677 नाव आगमन वेरावल बंदरगाह से दर्ज किया गया। वेरावल के बाद पोरबंदर बंदरगाह आता है, जहाँ नावों की आगमन संख्या 3106 थी। अवधि के दौरान 46 बंदरगाहों में से केवल 7 में 1000 से अधिक नाव

संकेंद्रित क्षेत्र

आगमन दर्ज किए गए, जिनका विवरण तालिका 5 में दिए गए हैं। मत्स्यन यानों के 78% से अधिक ने अपना पकड़ को ट्रोलर श्रेणी वालों के बंदरगाहों में लैंडिंग किया और शेष लैंडिंग पर्स सेनर्स, रिंग सेनर्स, गिल नेटर्स और पारंपरिक क्राफ्ट से किया गया।

तालिका 5. जनवरी 2018 के दौरान > 1000 से अधिक नाव लैंडिंग दर्ज किया गया बंदरगाह

क्रम सं.	मत्स्यन बंदरगाह	राज्य	नाव लैंडिंग की संख्या
1	वेरावल	गुजरात	4677
2	पोरबंदर	गुजरात	3106
3	मंगरोल	गुजरात	2658
4	मैंगलोर	कर्नाटक	2092
5	माल्पे	कर्नाटक	2001
6	हार्णे	महाराष्ट्र	1362
7	रत्नागिरी (मिरकरवाड़ा)	महाराष्ट्र	1042

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 6 में पिछले महीनों के साथ जनवरी 2018 के आंकड़ों की तुलना दिखाती है। जनवरी के दौरान, दिसंबर 2017 की तुलना में कुल मत्स्य पकड़ में 3700 टन की अधिक वृद्धि हुई है। पेलाजिक फिनफिश कुल पकड़ के उच्चतम योगदानकर्ता के रूप में जारी रहा परंतु हिस्से में 5% की कमी दर्शाई गई। डेमर्सल फिनफिश संसाधनों का हिस्सा प्रतिशत 4% बढ़ गया और शेलफिश अवतरण का हिस्सा प्रतिशत 1% बढ़ गया। इस अवधि के दौरान रिबनफिश सर्वोच्च योगदानकर्ता के रूप में जारी रहा और इंडियन ऑइल सारडीन पाँचवें स्थान पर चली गई।

अवतरण के मामले में गुजरात राज्य शीर्ष स्थान पर रहा, लेकिन सबसे अधिक पकड़ दर्ज करने वाला बंदरगाह केरल का बेपोर था। मत्स्य अवतरण की कुल मात्रा के मामले में वेरावल बंदरगाह बेपोर के बाद केवल दूसरा स्थान प्राप्त कर सका। दिसंबर 2017 की तुलना में जनवरी 2018 में दर्ज की गई नाव आगमन की कुल संख्या में 1400 से अधिक नावों की वृद्धि हुई थी।

तालिका 6. आंकड़े का तुलनात्मक विश्लेषण

	नवंबर 2017	दिसंबर 2017	जनवरी 2018
कुल पकड़	1,04,988.48 t	82,849.37 t	86,568.64 t
पेलाजिक फिनफिशों का अवतरण	54,485.10 t (52%)	39,510.15 t (48%)	37,443.01 t (43%)
डेमर्सल फिनफिशों का अवतरण	25,499.46 t (24%)	23,492.34 t (28%)	27,540.88 t (32%)
शेलफिशों का अवतरण	25,003.91 t (24%)	19,846.87 t (24%)	21,584.75 t (25%)
उच्चतम लैंडिंग रिकार्ड की गई प्रजाति	इंडियन ऑइल सारडीन (15%)	इंडियन ऑइल सारडीन (10%)	रिबन फिश (9%)
उच्चतम लैंडिंग रिकार्ड किया गया राज्य	गुजरात (26%)	गुजरात (30%)	गुजरात (30%)
उच्चतम लैंडिंग रिकार्ड किया गया बंदरगाह	वेरावल (13%)	वेरावल (13%)	बेपोर (13%)
कुल नाव आगमन	36,858	32,115	32,115

*कुल पकड़ का प्रतिशत

संक्षेप

जनवरी 2018 में, भारत के प्रमुख 46 मत्स्यन अवतरण स्थानों में कुल 86568.64 टन समुद्री मत्स्य संसाधनों का अवतरण किया गया, जिनमें पेलाजिक फिनफिश ने शेलफिश स्टॉक और डेमर्सल फिनफिश की तुलना में अधिक मात्रा में योगदान दिया। अवतरण किया गया कुल मात्रा के संदर्भ में रिबनफिश प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में रिकार्ड किया गया। पश्चिमी तट से हुई अवतरण

ने संयुक्त रूप से कुल पकड़ के 85% से अधिक का गठन किया और दक्षिण पश्चिम तट ने 43% से अधिक के हिस्से का योगदान दिया। गुजरात राज्य ने 9 समुद्री तट राज्यों में से सबसे ज्यादा पकड़ दर्ज की। 46 चयनित बंदरगाहों में से 18 बंदरगाहों ने 1000 टन से अधिक मत्स्य अवतरण रिकार्ड की और बेपोर बंदरगाह ने सर्वोच्च अवतरण रिकार्ड की। हालांकि वेरावल बंदरगाह द्वारा सबसे ज्यादा नाव आगमन दर्ज किया गया।

ब्लू स्विमिंग केकड़ा पोर्टुनस पेलाजिकस पर चिरस्थाई परियोजना

डॉ. जी. संजीवीराज

समन्वयक, बीएससी एफआईपी योजना, केकड़ा माँस प्रसंस्करणकर्ता संघ, भारत

प्रोटीन समृद्ध खाद्य पदार्थ, विशेष रूप से पशु प्रोटीन की दुनिया भर में उच्च माँग है। समुद्री एवं मीठा जल संसाधनों के क्रस्टेशियन, दोनों पर्यावरणों के फिनफिश और समुद्री पर्यावरण के मोलस्कस माँस जैसे मत्स्य और मत्स्य उत्पादों की माँग दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं।

क्रस्टेशियनों में, समुद्री पर्यावरण के श्रिम्प घरेलू और वैश्विक, दोनों बाजारों में सबसे बड़ा हिस्से के रूप में है। समुद्री प्रयावरण और जलकृषि फार्म के श्रिम्प वैश्विक माँग के साथ ही साथ घरेलू जरूरतों को भी पूरा करता है।

क्रस्टेशियन मात्स्यिकी का एक और प्रमुख घटक केकड़ा द्वारा सहभाजित करता है। केकड़ा जो समुद्री और खारा पानी



तूत्तिकोरिन जिले के वेलापट्टी मत्स्यन गाँव में ब्लू स्विमिंग केकड़ा अवतरण

पर्यावरण से निर्यात किए जाते हैं। निर्यात योगी या जीवित खारे पानी के केकड़े आकार में बड़े होते हैं- इसे वैज्ञानिक तौर पर सिल्ला ट्राक्वाबारिकस और छोटा केकड़ा- सिल्ला सेरेटा के नाम से जाना जाता है। जहाँ तक समुद्री केकड़े का संबंध है, इसमें कई प्रजातियाँ हैं; लेकिन केवल सीमित संख्या प्रजातियाँ खाद्य योग्य है और इसमें से, सबसे पड़ा केकड़ा जैसे पोर्टुनस पेलाजिकस आम तौर पर ब्लू स्विमिंग केकड़ा (बीएससी) के रूप में जाना जाने वाला यह केकड़ा, घरेलू और वैश्विक दोनों बाजारों में सबसे पसंदीदा है। ये केकड़ों को भारत के दोनों तटों के लगभग सभी मत्स्य लैंडिंग(अवतरण) केन्द्रों में बड़ी मात्रा में इसका लैंडिंग किया जाता है। उनको आम तौर पर पारंपरिक

मत्स्यन क्राफ्ट में कब्जा कर लिया जाता है, अब फाइबरग्लास रीइन्फोर्स्ड प्लास्टिक और एफआरपी क्राफ्ट और अन्य ट्रोलरों द्वारा किया जाता है। मत्स्यन के लिए उपयोगित गियर सेट गिल नेट है।

ब्लू स्विमिंग केकड़ा पोर्टुनस पेलाजिकस

यह प्रजातियाँ एक स्वतंत्र तैराकी केकड़ा है और यह ज्यादातर तटवर्ती जल में रहती है, जहाँ खाद्य पदार्थ प्रकृति में प्रचुर मात्रा में है। वयस्क पैदावार के आकार (18-22 से.मी.) है। इसका उपजाऊपन भी उच्च है। केकड़े खुले समुद्र में स्थानांतरित हो जाते हैं, जहाँ समुद्र का पानी साफ होता है। शुरुआत में अंडे पीले रंग के होते हैं, जैसे वे बढ़ते हैं, अंडे का रंग नारंगी/भूरा हो जाता है। नर और मादा केकड़ों के संभोग से, जोकि उनका लिंग अलग है, प्रजनन होता है। संभोग के दौरान पुरुष स्पेर्माटोजोआ को मादा के उदरीय पक्ष पर स्थित स्पेरमाथेका में जमा कर देगा। एक बार जब केकड़ा अंडा उत्पादित करते हैं, इसका रंग भूरा होते हैं, जिसमें पूरी तरह से परिपक्व अंडे काले रंग के रंगाई में होते हैं और उर्वरक अंडे माईक्रोस्कोपिक छोटे प्लांकटोनिक लार्वे के रूप में बाहर निकलते हैं। इन लार्वा को किशोर केकड़ों तक पहुँचने के लिए कई विकासों से गुजरना पड़ता है। भारतीय द्वीपसमूह के दोनों तटों में इस ब्लू स्विमिंग केकड़े की उपस्थिति पाई गई है।

देश लगभग 8,000 कि.मी. लंबी तटरेखा तथा तमिलनाडु में 1,076 कि.मी. के साथ समृद्ध है। इनब्लू स्विमिंग केकड़ों



अंडा युक्त केकड़े

संकेंद्रित क्षेत्र

का लैंडिंग दोनों तटों पर किया है, लेकिन केकड़ों का लैंडिंग बड़ी मात्रा में पूर्वी तट पर किया है। पश्चिमी तटीय क्षेत्र में केकड़ों का पकड़ना मौसमी है। प्रमुख लैंडिंग केंद्र कच्छ की खाड़ी तथा कारवार तट है और इसका औसत वार्षिक अवतरण



सीएमपीए क्षेत्र श्रमिक आंकड़ा संग्रहीत करते हुए

लगभग 500-700 मी. टन है। पूर्वी तट पर तीन प्रमुख लैंडिंग केंद्रों की पहचान की गई है; यानि, मानार की खाड़ी या जीओएम, पाल्क बे या पीबी और पश्चिम बंगाल तक पहुँचने वाली



मछुआरे गिल नेट से केकड़ों को निकाल रहे हैं

पाल्क बे के ऊपर वाला क्षेत्र। चूंकि जीओएम और पीबी तटों में अधिक संख्या में केकड़ा अवतरण मत्स्यन गाँव हैं। काकीनाडा तट में बरसात के मौसम के दौरान केवल मियादी/ मौसमी मत्स्यन रिकार्ड करता है और वार्षिक औसत लैंडिंग 80-100 मी. टन के बीच है। पीबी क्षेत्र 500 मीट्रिक टन का औसत लैंडिंग रिकार्ड किया है। जीओएम क्षेत्र के लैंडिंग केन्द्र द्वारा प्रतिवर्ष 2,000 से 3,000 मीट्रिक टन की बड़ी मात्रा दर्ज की गई। बीएससी बड़ी मात्रा में दोनों तट के मत्स्यन गाँवों से पकड़ा जाता है।

इस प्रकार से पैदावार केकड़ों का लगभग 20 प्रतिशत स्थानीय बाजारों में उपभोग किया जाता है, और बाकी 80 प्रतिशत पकड़ को विविध अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिए निर्यात किया जाता है। एक छोटी मात्रा का उपयोग कटे हुए प्रशीतित केकड़ों के रूप में और बाकी का उपयोग पाश्चुरीकृत तैयार उत्पादों के रूप में किया जाता है। पकड़ का लगभग 40 प्रतिशत यू एस को

केकड़ा माँस प्रसंस्करणकर्ता संघ (सीएमपीए), भारत

केकड़ा माँस प्रसंस्करणकर्ता संघ (सीएमपीए), भारत ने यूएस में स्थित राष्ट्रीय मात्स्यकी संस्थान, केकड़ा परिषद (एनएफआई सीसी) की तकनीकी और वित्तीय सहायता के तहत केकड़ा निर्यात कंपनियों को अपने सदस्य बनाकर, भारत में ब्लू स्विमिंग क्रैब (बी एस सी) के लिए मत्स्यन सुधार कार्यक्रम (एफआईपी) को प्रारंभ किया है।

सिद्धांत 1 ब्लू स्विमिंग केकड़े की जैविक स्थिति बीएससी की चिरस्थायिता और स्पॉनिंग क्षमता

सिद्धांत 2 पारिस्थितिक स्थिति पर्यावरणिक स्थिति और पकड़ विश्लेषण

सिद्धांत 3 बीएससी मत्स्यन का प्रबंधकीय स्थिति मत्स्यन समुदाय जैसे विभिन्न पणधारियों की भागीदारी, दलाल और उद्योगों और प्रशासकों जैसे कि गाँव के प्रमुख, स्थानीय और जिला प्रशासक, राज्य मात्स्यकी विभाग और राज्य सरकार।

श्री चि. किशोर कुमार, निदेशक, सैंडी बे सीफूड्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड और एमपीईडीए के उपाध्यक्ष। सीएमपीए के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत है,

संकेंद्रित क्षेत्र

निर्यात किया जाता है। चूँकि बीएससी की माँग वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है, इसकी आबादी चिरस्थायिता का संरक्षण, स्पॉनिंग क्षमता, समुद्री पर्यावरण और इसके पारिस्थितिक पर्यावरण आदि में केकड़े की भर्ती में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय मात्स्यिकी संस्थान (एनएफआई) केकड़ा परिषद

एनएफआई केकड़ा परिषद केकड़ा चिरस्थायिता पर संकेंद्रित एक संघ है। यू.एस. को आयातित ब्लू स्विमिंग केकड़े का लगभग 85 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व सम्मिलित रूप से एनएफआई केकड़ा परिषद के सदस्य करते हैं। अमेरिकी समुद्री खाद्य कंपनियों के एक संगठन के रूप में होने के कारण, केकड़ा परिषद ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के साथ-साथ स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए भी सफल केकड़ा मात्स्यिकी को बनाए रखने के महत्व को पहचाना है। एनएफआई केकड़ा परिषद में ब्लू स्विमर केकड़ा उद्योग के प्रतिनिधि शामिल हैं जो ध्वनि पारिस्थितिक और आर्थिक सिद्धांतों के आधार पर मात्स्यिकी और उद्योग प्रबंधन को बढ़ाने के लिए रूपांकित किए गए मानकों और प्रथाओं के वैश्विक कार्यान्वयन को शुरू करने और इसकी समर्थन करने के लिए समर्पित है। परिषद का प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि ब्लू स्विमिंग केकड़ा आबादी जो पारिस्थितिक तंत्र पर निर्भर है और मात्स्यिकी पर निर्भर समुदाय अब और भविष्य में व्यावहार्य, उत्पादक और स्थिर बने रहें। परिषद शिक्षा, पक्षपोषण और इसके सदस्यों की प्रामाणिकता के माध्यम से वैश्विक उद्योग स्थिरता प्राप्त करने के लिए काम करता है। परिषद का गठन 2009 में हुआ था और इसमें 17 सदस्य कंपनियाँ हैं, जो यू.एस. को आयातित ब्लू स्विमिंग केकड़े के 85 प्रतिशत से अधिक का प्रतिनिधित्व करती हैं।

एनएफआई केकड़ा परिषद देशों में वित्त स्थिरता पहल के विकास में अपने काम के विस्तार हेतु प्रयास करता है, जहाँ ब्लू स्विमर केकड़े की पैदावार और निर्यात किया जाता है। हालाँकि, परिषद वर्ष 2007 में गठित इंडोनेशियन केकड़ा उत्पादक संघ एपीआरआई, वर्ष 2009 में गठित फिलिपीनी केकड़ा उत्पादक संघ, आईएनसी, ओर पीएसीपीआई, वर्ष 2010 में गठित वियतनाम समुद्रीखाद्य निर्यातक एवं प्रसंस्करणकर्ता संघ ओर वीएएसईपी केकड़ा परिषद, वर्ष 2012 में गठित थाई केकड़ा उत्पाद समूह या टीसीपीजी, वर्ष 2012 में गठित भारतीय केकड़ा उत्पाद समूह या आईसीपीजी और वर्ष 2013 में शुरू श्रीलंका के समुद्री खाद्य निर्यातक संघ या एसईएसएल पहल के साथ काम करती है, मात्स्यिकी सुधार योजनाओं के आधार पर काम को वित्त पोषित करने के लिए विकसित किया गया है, जिसे परिषद की मंजूरी के लिए प्रस्तुत किया गया है। वर्ष 2017 के दौरान, सीएमपीए के तहत बीएससी एफआईपी गतिविधि भारत में शुरू हुई।

सीधे वित्त पोषित चिरस्थायी परियोजनाओं, अंतर्देशीय उत्पादक संगठनों द्वारा पर्यवेक्षितकरने के अलावा, खरीद विनिर्देश में न्यूनतम

8 से.मी. पृष्ठवर्ग चौड़ाई वाले को शामिल करने के लिए परिषद ने 2011 के पहले एक स्वैच्छिक नीति के माध्यम से सभी उत्पादक देशों में कम आकार के/असामयिक केकड़ों के चरणबद्ध पैदावार का समर्थन करने के लिए सहमत हुई थी। इसके अलावा, उत्पाद विनिर्देशों को विकसित करना जो चिरस्थायी मत्स्यन प्रथाओं में सुस्पष्ट है। वर्ष 2017 में, प्रसंस्करणकर्ताओं ने केकड़ा माँस संघ (सीएमपीए) को पंजीकृत किया जिसमें सात सक्रिय निर्यात कंपनियाँ सदस्य हैं।

मत्स्यन सुधार कार्यक्रम (एफआईपी)

मत्स्यन सुधार कार्यक्रम (एफआईपी), यूएसए के केकड़ा परिषद के राष्ट्रीय मात्स्यिकी संस्थान का एक कार्यक्रम है, वर्ष 2013 से केकड़ा निर्यात करने वाले देशों में से लगभग सभी देशों में शुरू किया है। इन्डोनेशिया ने वर्ष 2013 से अध्ययन किया



बैकॉक बैठक में भाग लिए विभिन्न देशों के प्रतिनिधि

है, इसके बाद वर्ष 2017 के मध्य से वियतनाम, फिलिपींस, थायलैंड, श्रीलंका और भारत द्वारा अध्ययन किया गया। एफआईपी कार्य तमिलनाडु के तूत्तिकोरिन जिले के वेल्लाप्पाट्टी नामक प्रमुख केकड़ा लैंडिंग केंद्र से शुरू किया गया और पूरे भारत के सभी अवतरण केन्द्रों में इसका कार्य चल रहा है। परियोजना के शुरुआत में, केकड़ा पकड़ का आँकड़ा तमिलनाडु से लिया गया। डॉ. जी संजीवीराज, को समन्वयक के रूप में और दो फील्ड श्रमिकों की नियुक्ति के साथ जुलाई 2017 से कार्यक्रम शुरू कर दिया गया। टीम ने तूत्तिकोरिन जिले के प्रमुख और विशिष्ट केकड़ा मत्स्यन गाँव वेल्लाप्पाट्टी से और रामनाथपुरम जिले के कई मत्स्यन गाँवों से बीएससी की दैनिक पकड़ संरचना एकत्र करना शुरू किया।

आँकड़े में दैनिक कुल पकड़ की बायोमास (मात्रा किलो में), कुल लैंडिंग से प्रत्येक केकड़े की संख्या, क्रमशः नर और मादा केकड़ों और उनके बायोमास की संख्या, संख्यात्मक और परिमाण मात्रा के आधार पर नर और मादा के जाति अनुपात, दैनिक लैंडिंग की पूरी मात्रा में नर और मादा केकड़ों का प्रतिशत, मेरिस्टिक पात्रों पर आँकड़ा जैसे कि पररुष नर और

संकेंद्रित क्षेत्र

मादाओं की कैरेपेस लंबाई सीमा और उनके प्रतिनिधित्व प्रतिशत और दोनों जातियों की प्रत्येक वजन सीमा और निषेचित से युक्त केकड़ों की प्रासंगिक अवतरणजो बहुत कम मात्रा में होती है (कुल पकड़ का 1-2% कम) और निषेचित से युक्त अंडो की स्थिति आदि शामिल है।

संबद्ध कार्यकलाप

जुलाई 17 से 23, 2017 के दौरान डॉ. जी. संजीवराज, सीएमपीए के समन्वयक को श्रीलंका केकड़ा निर्यात परिषद समन्वयक, डॉ. स्टीव क्रेच से इसके पृष्ठभूमि ज्ञान हासिल करने के लिए श्रीलंका में प्रतिनियुक्त किया गया। श्री किशोर कुमार,



▲ बैठक के प्रतिभागी



▲ दिनांक जनवरी 6, 2018 को सीएमएफआरआई के क्षेत्रीय केंद्र में आयोजित पणधारी बैठक

अध्यक्ष और डॉ. जी. संजीवराज, सीएमपीए के समन्वयक द्वारा दिनांक 20 से 29, सितंबर 2017 के दौरान बैंकाक में आयोजित एफआईपी समन्वयकों की दूसरी बैठक में भाग लिया गया, जिसमें अन्य एशियाई देशों के सभी समन्वयकों के अलावा एनएफआई-सीसी और डबल्यूडबल्यूएफ-यूएसए के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। एनएफआई सीसी के प्रभारी, डॉ. अब्दुल गफर, एफआईपी ने बैठक की अध्यक्षता की। इसके बाद, दिनांक 7 नवंबर, 2017 को सीएमएफआरआई, कोचीन के सहयोग से एफआईओ के आगे आने की तारीख पर चर्चा करने के लिए केंद्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, मुख्यालय, कोचीन में एक बैठक की व्यवस्था की गई। डॉ. सुनील मोहम्मद, मोलस्कन मात्स्यकी प्रभाग, डॉ. जोसिलीन जोस, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. विनोद मलयिलेत, डबल्यूडबल्यूएफ-इंडिया, डॉ. रंजित सुशीलन, एम.एस.सी. भारत के प्रभारी, श्री किशोर कुमार, अध्यक्ष, डॉ. संजीवराज, समन्वयक, डॉ. अजिता कुमार और श्री मयिलवाहनन, सीएमपीए के सदस्य, डॉ. जेम्स डेविड ने बैठक में भाग लिया।

पणधारी की बैठक

दिनांक 6 जनवरी, 2018 को सीएमएफआरआई, के मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में एक पणधारी बैठक आयोजित करने का निर्णय

लिया गया। प्रथम बैठक सीएमएफआरआई मुख्यालय में आयोजित की गई। प्राकृतिक पर्यावरण से बीएससी कृषि के लिए बेहतर प्रबंधन प्रथाओं (बीएमपी) के विभिन्न तरीकों और किशोरों और युवा केकड़ों को पकड़ने से कैसे बचें, जो केकड़ा आबादी और स्पॉनिंग क्षमता की चिरस्थायिता के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं, आदि पर चर्चा करने के लिए बैठक आयोजित की गई थी। निषेचित अंडो से युक्त केकड़ों को ज्यादा नुक्सान पहुँचाए बिना गियर से तुरंत हटाने की भी चर्चा की गई। इस प्रकार, बीएससी की स्पॉनिंग क्षमता का सुधार किया जा सकता है। फोरम ने ज़ोर दिया कि एफोर्सिंग प्राधिकारियों जैसे मात्स्यकी विभाग राजस्व अधिकारी और स्थानिय कछुओं की भदंत से राज्य मात्स्यकी विभाग, राजस्व अधिकारी और स्थानीय मछुआरों की मदद से बीएससी के प्रजनन और नर्सरी के आधार का अध्ययन किया जाना चाहिए और उन क्षेत्रों को आरक्षित करने के लिए उचित कार्रवाई की जानी चाहिए।

सीएमपीए के सदस्य, सीएमएफआरआई के वैज्ञानिक, एक डबल्यूडबल्यूएफ-इंडिया प्रतिनिधि, एक एमएससी-इंडिया प्रतिनिधि, तमिल नाडु मात्स्यकी विश्वविद्यालय से एक संकाय सदस्य, तमिल नाडु राज्य मात्स्यकी विभाग के तीन अधिकारी और मंडपम, पांबम, देवीपट्टनम, करंगडू तथा तोंडी क्षेत्र के 17 मछुआरों ने बैठक में भाग लिया था। बेहतर मत्स्यन प्रबंधन योजना (एफएमपी) को तैयार करने हेतु दिनांक 26 मार्च, 2018 को अगली बैठक आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया।

निष्कर्ष

एफआईपी कार्यकलापों में एमएससी में प्रस्तावित तटों पर बीएससी पर आँकड़ा एकत्रित करने में और यह स्टॉक की चिरस्थायिता का अध्ययन करने के लिए एक निरंतर कार्यक्रम है, स्पॉनिंग क्षमता, और केकड़ा मात्स्यन के लिए भावी भर्ती, केकड़ा आबादी पर पर्यावरण का प्रभाव और पकड़-दर विश्लेषण आदि शामिल है। बीएससी पर आधारित यह अध्ययन पणधारियों और उद्योग और भारतीय राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के हित में निश्चित रूप से सहायक होंगे।



समुद्री सुरक्षा पर सामुदायिक बातचीत कार्यक्रम



डॉ. विनोथ रवीन्द्रन, एससीओ, नेटफिश भाषण देते हुए

दिनांक 19 जनवरी, 2018 को मंडपम में नेटफिश, एमएस स्वामीनाथन अनुसंधान संस्थान (एमएसएसआरएफ) तथा भारतीय तटरक्षक दल द्वारा संयुक्त रूप से समुद्री सुरक्षा पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुल 102 मछुआरों ने इस सामूहिक सामुदायिक बातचीत कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। श्री शंकर राजू, कमांडेंट (जेजी), आईसीजीएस मंडपम, श्री वी विजय, कमांडेंट (जेजी) 79 एसीवी स्क्वाड्रोन, सुश्री शिरीन चंद्रन, उप कमांडेंट, डॉ. दिव्य भारती, सर्जन लेफि्टनेंट, आईसीजीएस मंडपम, श्री एसक जयकुमार, उप निदेशक, तमिलनाडु मात्स्यकी विभाग, डॉ. विनोथ एस. रवीन्द्रन, एससीओ, नेटफिश, श्री केवि कुमार, परियोजना सहभागी, एमएसएसआरएफ, श्री सलाम, तकनीकी सहभागी, एमएसएसआरएफ, श्री गोपीनाथ, सहायक निदेशक (मात्स्यकी), मंडपम, श्री सादिक, निरीक्षक (मात्स्यकी), मंडपम, श्री ज्योति बसु और श्री राजकुमार, उप निरीक्षक, तटीय सुरक्षा ग्रुप (सीजीएस), मंडपम और श्री तंकवेलु, मछुआरा संघ नेता आदि गणमान्य व्यक्ति इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

तटरक्षक अधिकारियों ने 'विपत्ती चेतावनी और समुद्र में तटरक्षक की सहायता प्राप्त करना', 'मत्स्यन यानों में स्वचालित सूचना प्रणाली (एआईएस) का महत्व', 'ओनबोर्ड में चीनी वीएचएफ के उपयोग से उत्पन्न मुद्दे', 'ओनबोर्ड पर आवश्यक समुद्री सुरक्षा उपकरण', और अन्य सुरक्षा उपायों के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में समुद्री सुरक्षा उपकरणों के उचित उपयोग पर प्रदर्शन भी आयोजित किया गया। उचित निपटान और स्वच्छता प्रणाली



समुद्र सुरक्षा उपकरणों के उपयोग पर प्रदर्शन

के माध्यम से समुद्री तट के साथ-साथ मत्स्यन बंदरगाहों को साफ रखने के महत्व पर मछुआरों को जानकारी दी गई और उन्होंने समुद्री प्रजातियों के सुरक्षा और संरक्षण के पहल के लिए भी विनती की। डॉ. विनोथ एस. रवीन्द्रन ने विभिन्न मत्स्यन प्रथाओं, जो मत्स्यन भंडारण और स्वस्थ/सुरक्षित मत्स्यन प्रथाओं की ह्रास करने वाले विभिन्न तरीकों पर विचार विमर्श किया। इसके आगे उन्होंने निचले तल की ट्रोलिंग का हानिकारक प्रभाव जो लुप्तप्राय प्रजातियों समेत समुद्री बिस्तर से वनस्पतियों और जीवों के विलुप्त होने का कारण बन रहा है, इसके बारे में भी समझाया। एमएसएसआरएफ के श्री केवि कुमार और श्री सलाम ने पान इंडिया फिशर फ्रेंड मोबाइल एप्लिकेशन (एफएफएमए) के बारे में जानकारी दी, जो मछुआरे समुदाय की समग्र तट-से-तट आवश्यकताओं के लिए एक एकल-जालक समाधान है।



कार्यक्रम का परिदृश्य

कार्यक्रम के दौरान स्टेशन चिकित्सा टीम द्वारा कार्डियोपल्मोनरी रेस्ससीटेशन(सीपीआर), जीवन रक्षा तकनीक पर प्रदर्शन एवं व्याख्यान दिया गया। मछुयारों को बेहतर रूप से समझने के लिए कार्डियोपल्मोनरी रेस्ससीटेशन कार्यप्रणाली पर एक विडियो भी दिखाया गया। और चिकित्सा अधिकारी, आईसीजीएस, मंडपम

की उपस्थिति में को सीपीआर प्रक्रिया को करने का अवसर देकर इसमें मछुयारों को प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम की समाप्ती पर मछुयारों को समुद्र में आने वाले खतरों के पहले, समुद्र में और मत्स्य पकड़ने के बाद, लिए जाने योग्य कार्यों का विवरण युक्त पर्ची मछुयारों को वितरित किया गया।



‘शुचित्व सागरम’ समुद्र से प्लास्टिक उन्मूलन पर परियोजना

जोइस वी तोमस, एन.आर. संगीता और वी.वी. अफसल
नेटफिश-एमपीईडीए

नेटफिश, एमपीईडीए के एक विस्तारण विंग ने नाव परिचालक संघ, कोल्लम के सहयोग से केरल के शक्तिकुलंगरा और नीडकरा मात्स्यकी बंदरगाहों में समुद्र से जमा किए प्लास्टिक कचड़े की उन्मूलन के लिए ‘शुचित्व सागरम’ नामक एक परियोजना शुरू की है। नदियों के माध्यम से भूमि से प्रवाहित और अन्य मानव गतिविधियों द्वारा समुद्र में बड़ी मात्रा में प्लास्टिक कचड़े जमा हुए हैं, इस अवबोध से ही यह पहल प्रारंभ किया है। मछुआरे समूह के बीच अपने विस्तार कार्यक्रमों के एक हिस्से के रूप में नेटफिश ने समुद्र में प्लास्टिक डालने की दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा कर रहे हैं। मछुयारों के साथ इस संबंध में किए गए बातचीत में उनको यह महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है कि प्लास्टिक कचड़े समुद्री तल में, मुख्य रूप से 50 मीटर की गहराई तक

बहुत खतरा पैदा करता है और मत्स्यन जाल में प्रवेश करने और मत्स्यन यानों के प्रोपलर्स के उलझने जैसे कई समस्याएँ पैदा कर सकते हैं। समुद्र से इन प्लास्टिक कचड़े को हटाने की एक पहल के रूप में नेटफिश ने कोल्लम जिले के नाव परिचालक संघ के साथ जुड़कर केरल के कोल्लम जिले के नीडकरा मत्स्यन बंदरगाह पर एक प्लास्टिक थ्रेडिंग इकाई की स्थापना करके समुद्र से प्लास्टिक कचड़े के उन्मूलन के लिए एक पायलट परियोजना शुरू करने का निर्णय लिया। परियोजना के महत्व को समझकर अन्य विभाग जैसे मात्स्यकी विभाग, बंदरगाह अभियांत्रिकी विभाग, शुचित्व मिशन केरल, क्लीन केरल कंपनी और एसएएफ भी इस प्रयास में शामिल होकर इसे देश के इस प्रकार के एक बड़े कार्यक्रम के रूप संपन्न कर दिया।



श्रीमती जे. मेसीकुट्टी अम्मा, केरल के मात्स्यकी मंत्री ने समुद्र से अपशिष्ट एकत्रित करने हेतु तैयार किए गए बैगों का लांच करते हुए

शुरुआत

नेटफिश ने मछुआरों से ट्रोलींग के दौरान अपने मत्स्य जाल में इकट्ठा प्लास्टिक कचड़े के मात्रा के बारे में मूल जानकारी एकत्र की। नेटफिश द्वारा एक परियोजना प्रस्ताव विकसित किया जिसे नाव परिचालक संघ द्वारा समर्थित किया गया। इसके बाद इस परियोजना प्रस्ताव के बारे में केरल शुचित्व मिशन के अधिकारियों के साथ चर्चा की और शक्तिकुलंगरा मत्स्यन बंदरगाह में प्लास्टिक श्रेडिडिंग यंत्र की स्थापना हेतु इनसे वित्तीय और तकनीकी सहायता माँगी। निर्णयानुसार दिनांक 22 जुलाई, 2017 को शक्तिकुलंगरा में आयोजित नाव परिचालकों के 43 वीं वार्षिक समिति बैठक में 'शुचित्व सागरम' परियोजना की घोषणा की। श्रीमती जे. मेसीकुट्टी अम्मा, मात्स्यकी मंत्री इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थी।

कार्यक्रम में समुद्र में मछुआरों द्वारा प्लास्टिक कचड़े को इकट्ठा करने के लिए नेटफिश द्वारा तैयार किया गया एक नमूना बैग भी प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम के लिए सहायता हेतु मंत्री के साथ हुए चर्चा के दौरान, उन्होंने मात्स्यकी विभाग ने इस कार्यक्रम का समर्थन करने का तुरंत निर्णय लिया और इस परियोजना में अन्य विभागों को शामिल करने हेतु एक अग्रणी भूमिका निभाई जो अंततः इसे एक बड़ा कार्यक्रम के रूप में बना दिया। मंत्री ने, दिनांक 5 अगस्त, 2017 को नेटफिश द्वारा प्रदान किए गए बैगों में मत्स्यन के दौरान नावों द्वारा एकत्रित कचड़े को प्राप्त करके परियोजना का उदघाटन किया। बंदरगाह अभियांत्रिकी विभाग को एकत्रित कचड़े की पृथक्करण एवं श्रेडिडिंग तथा पुनरावृत्ति के लिए शुचित्व मिशन द्वारा प्रबंधित

एक इकाई की संचालन हेतु नीडकरा बंदरगाह में एक स्थान अर्बाटित किया गया। इस परियोजना के लिए विभिन्न विभागों से निधि प्राप्त किया गया और श्रेडिडिंग इकाई का औपचारिक उदघाटन नीडकरा मत्स्यन बंदरगाह में दिनांक 20, नवंबर 2017 को संपन्न हुआ।



मछुआरे लोगों से प्लास्टिक अपशिष्ट युक्त बैग ग्रहण करके परियोजना का उदघाटन

कार्यक्रम में शामिल अभिकरण

नेटफिश के साथ इस परियोजना के प्रारम्भिक भागीदार नाव परिचालक संघ, कोल्लम, और नीचे सूचीबद्ध विभिन्न विभाग भी शामिल थे और इस कार्यक्रम के भागीदारों के भूमिका और कार्य नीचे दी गई तालिका (तालिका 1) में दी गई है।

संकेंद्रित क्षेत्र

क्रम सं.	विभाग / अभिकरण	शुचित्व सागरम परियोजना में भूमिका
1	शुचित्व मिशन, केरल	नीडकरा मत्स्यन बंदरगाह में प्लास्टिक श्रेडिंग इकाई की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता और एसएएफ़ के सदस्यों को प्रशिक्षण।
2	क्लीन केरल कंपनी	श्रेडिंग इकाई की स्थापना के पहले और बाद में तकनीकी सहायता।
3	बंदरगाह अभियांत्रिकी विभाग (एचईडी)	नीडकरा मत्स्यन बंदरगाह पर प्लास्टिक श्रेडिंग इकाई की स्थापना हेतु क्षेत्र और विद्युत कनेक्शन प्रदान करना।
4	मछुआरे महिला के लिए सहायता सोसाइटी, (एसएएफ़), मात्स्यकी, विभाग, केरल	मानव शक्ति, श्रमिकों की वेतन, विद्युत प्रभार आदि सहित श्रेडिंग इकाई का संचालन
5	नाव परिचालक संघ, कोल्लम जिला	क. परियोजना की समग्र निगरानी और संचालन। ख. समुद्र से प्लास्टिक लाना और संग्रह करना ग. कार्यक्रम की देखभाल हेतु पर्याप्त जनशक्ति का परिनियोजन।
6	नेटफिश-एमपीईडीए	अपशिष्ट संग्रह के लिए पर्याकरण अनुकूल बैगों एवं जागरूकरा स्टिकरों की मत्स्यन नावों को आपूर्ति करना और मछुआरों के लिए जागरूकता प्रशिक्षण आयोजित करना।

परियोजना का संचालन

मात्स्यकी विभाग ने परियोजना का संचालन महिला मछुआरिन सहायता सोसाइटी (एसएएफ़) से मछुआरे महिला श्रमिकों द्वारा चलाई गई थी। इस परियोजना में मत्स्यन यानों से बैग एकत्रित करने, प्लास्टिक अपशिष्ट की छँटाई/पृथक्करण, धोना, सुखाना और श्रेडिंग (आंकड़े देखें) आदि के लिए कुल 30 कर्मचारी शामिल थे।

बंदरगाह पर पहुँचे बैग को इकट्ठा करने के लिए बंदरगाह और उसके आसपास में विभिन्न संग्रहण केंद्र शुरू किए गए हैं। इसके अलावा, तटीय क्षेत्र के अन्य पंचायतों को भी प्लास्टिक अपशिष्ट की आपूर्ति करके इस प्रयास में शामिल होने के लिए कहा गया ताकि मशीन की सम्पूर्ण क्षमता पूरा किया जाए। श्रेडिंग इकाई का नियंत्रण एचईडी द्वारा साइट पर एक समन्वयक को नियुक्त

करके की जाती है। मात्स्यकी विभाग और स्वच्छ केरल मिशन द्वारा श्रमिकों को अपशिष्ट संचालन, सोर्टिंग और श्रेडिंग के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

नेटफिश ने इस कार्यक्रम के लिए 2000 पर्यवरण-अनुकूल थैले (बोरे) प्रदान किए जिसे समुद्र में मत्स्यन के दौरान मिलने वाले प्लास्टिक सामग्री को इकट्ठा करने के लिए प्रत्येक मत्स्यन यानों के लिए 2 संख्या से आपूर्ति की गई। लगभग 40-50 किलोग्राम वजन वाले लगभग 30-40 बैग प्रतिदिन शक्तिकुलंगरा बंदरगाह पर उतारे जाते हैं। इस परियोजना में स्थापित मशीनरी घटक नीचे दिए गए हैं (तालिका 2)। श्रेड किया गया प्लास्टिक को सड़क निर्माण सहित उपयुक्त गतिविधियों के लिए उपयोग किया जाएगा और प्रारंभ में एचईडी इस सामग्री को अपने अधीन के सड़क के काम के लिए उपयोग करेंगे।

क्रम सं.	मद	उद्देश्य
1	प्रति दिन / 1 टन की क्षमता वाले श्रेडिंग मशीन	प्लास्टिक अपशिष्ट श्रेडिंग करने हेतु
2	शार्पनिंग मशीन	श्रेडिंग मशीन के ब्लेड को तेज़ करने के लिए
3	हैड्रोलिक बडलिंग मशीन	एकत्रित प्लास्टिक अपशिष्ट से प्लास्टिक बोतलों को अलग करना। इसे अन्य पार्टियों को रीसाइक्लिंग के लिए दिया जाएगा।

संकेंद्रित क्षेत्र



1. नौकाओं से अपशिष्ट युक्त बैग प्राप्त करना।
2. श्रमिक पृथक्करण क्षेत्र के लिए ट्रॉली में बैग ले जाना।
3. अपशिष्ट का पृथक्करण।
4. प्लास्टिक अपशिष्ट की धुलाई।
5. श्रेडिंग इकाई पर लाए गए साफ और सूखे अपशिष्ट
6. श्रेडिंग मशीन में प्लास्टिक अपशिष्ट भरना।
7. श्रेड किया गया प्लास्टिक उत्पादन।
8. आगे की उपयोग के लिए थैलियों में संग्रहीत करना।

भविष्यका विस्तारण

इस परियोजना कार्यक्रम के सुचारु संचालन के लिए बहिःस्त्राव अभिक्रिया संयंत्र, धोने और सुखाने की मशीन, ट्यूब-वेल, ऊपरी टंकी और संप, गैर-प्लास्टिक अपशिष्ट डाइजेस्टर आदि को द्वारा इसको विस्तारित करने की उम्मीद है। निर्णयानुसार, इस परियोजना को अन्य तटीवर्ती पंचायतों तक भी विस्तारित किया जाना है और श्रेडिंग मशीन की क्षमता को पूरा करने के लिए ज़मीन से भी प्लास्टिक अपशिष्ट को इकट्ठा करने के लिए सुविधाएं बनाई जा रही है। अन्य क्षेत्रों को भी इस परियोजना में शामिल करने हेतु कदम उठाने के लिए बैठकें आयोजित की गईं और इस संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। कार्यक्रम के विस्तारण के दौरान, इस इकाई के लिए पास के सभी तटवर्तीय पंचायतों से प्लास्टिक अपशिष्ट को एकत्रित किए जाएंगे। यह परियोजना निश्चित रूप से समुद्र से प्लास्टिक मुक्त

करने वाली प्लास्टिक उन्मूलन इकाई के रूप में एक शानदार सफलता होगी।



नीडकरा बंदरगाह में केरल के वित्त मंत्री डॉ. टी. तोमस ऐसक द्वारा प्लास्टिक श्रेडिंग इकाई का औपचारिक उद्घाटन

निर्यात को बढ़ावा देने हेतु भुवनेश्वर में एमपीईडीए की उन्नत गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला

कई तरह के परेशानियों का सामना करने के बावजूद भी ओडीशा से समुद्रीखाद्य निर्यात वर्षों में लगातार वृद्धि दिखाई है। 2011 के दौरान एल.वन्नामी के प्रस्तुति से ओडीशा में श्रिम्प उत्पादन और निर्यात में तेज़ी से वृद्धि हुई है। प्रतिजैविकी मुक्त गुणवत्ता वाले श्रिम्प का उत्पादन इस समय एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और एमपीईडीए ने टैंडम मास स्पेक्ट्रोमेट्री लिक्विड क्रोमाटोग्राफी (एलसी/एमएस/एमएस) के एक और मशीन लगाकर भुवनेश्वर में अपनी गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला को मज़बूत करने हेतु समयोचित कदम उठाया। इस बीच प्रयोगशाला को सीएपी और एनएफ जैसे दो आवश्यक मानकों के विश्लेषण के लिए एनएबीएल से प्रमाणीकरण और ईआईसी से अनुमोदन प्राप्त हुआ है और अब वाणिज्यिक नमूने प्राप्त करने के लिए तैयार है।

उपर्युक्त के संदर्भ में, निर्यातकों, सोसाइटी कृषक सहित कृषकों, हैचरी प्रचालकों, संबंधित विभागों के अधिकारियों आदि के लिए एक मंच प्रदान करने हेतु और राज्य में समुद्री खाद्य निर्यात को बढ़ावा देने हेतु वर्तमान मुद्दों पर विचार-विमर्श करने और आगे की प्रगति के लिए उपयुक्त समाधान ढूँढने के लिए उचित गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित करके उद्योग के लाभ के लिए एमपीईडीए की गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भुवनेश्वर को समर्पित कर एक कार्यक्रम और दिनांक 19 फरवरी, 2018 को भुवनेश्वर में एक खरीददार-विक्रेता बैठक का आयोजन किया गया।

गणमान्य व्यक्तियों और मेहमानों की उपस्थिति में एमपीईडीए के अध्यक्ष डॉ. ए. जयतिलक, भा.प्र.से. ने एमपीईडीए की उन्नत गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला को समर्पित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अध्यक्ष ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि देश ने पहली बार छह बिलियन डॉलर मूल्य के समुद्री खाद्य निर्यात को पार कर दिया है और यह कृषकों और निर्यातकों द्वारा गुणवत्ता पर अधिक ध्यान देने की वजह से ही यह संभव हो पाया है। उद्योग से प्रतिजैविकी अवशेषों की पहचान के लिए अत्याधुनिक उपकरणों के साथ एक प्रयोगशाला का निरंतर माँग कर रहे हैं। यह देश में इस प्रकार के पाँचवीं प्रयोगशालाओं में से हैं और यहाँ क्लोरम्फेनिकोल और नाइट्रोफुरान के अलावा पैरामीटर के सत्यापन के लिए सुविधाएँ विकसित कर रही हैं, हाल में प्रसंस्करण और निर्यात हेतु अवशेष मुक्त कच्चे माल के लिए उनके गुणवत्ता आश्वासन के एक हिस्से के रूप में कृषकों, प्रसंस्करणकर्ताओं और निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत नमूने का परीक्षण किया जा रहा है।

श्री गगन कूमान ढल, भा.प्र.से. कृषि उत्पादन आयुक्त, ओडीशा सरकार ने कहा कि एमपीईडीए द्वारा इस तरह की उन्नत



श्री कलिकेश नारायण सिंह देव, माननीय सांसद और एमपीईडीए के प्राधिकरण सदस्य डॉ. ए. जयतिलक, भा.प्र.से., अध्यक्ष, एमपीईडीए और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भुवनेश्वर के समर्पण का उद्घाटन करते हुए

प्रयोगशाला की स्थापना करने से ओडीशा के समुद्री खाद्य निर्यातकों की दीर्घकालिक माँग पूरा हो गयी है।

श्री एल.एन. गुप्ता, अतिरिक्त मुख्य सचिव, एमएसएमई, ओडीशा ने निर्यातकों के लाभ हेतु गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला की स्थापना करने के लिए एमपीईडीए का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि राज्य ने निर्यात में 20 गुना वृद्धि दर्ज की है और वर्ष 2016-17 के दौरान वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा निर्यात चैंपियन राज्य के रूप में मान्यता प्राप्त की है। राज्य से कुल निर्यात को 1 करोड़ रुपए तक बढ़ाने के लिए निर्यात नीति प्रेरित करेगी।

श्री कैलाश नारायण सिंह देव, संसद सदस्य और प्राधिकरण के सदस्य ने नोट किया कि निर्यात गुणवत्ता उत्पादन में वृद्धि लाने के लिए इस तरह के विश्वस्तरीय परिष्कृत प्रयोगशाला समय की आवश्यकता थी। श्री बी.के. साहू, प्राधिकरण के सदस्य, एमपीईडीए, श्री वी. पद्मनाभन, राष्ट्रीय अध्यक्ष, एसईएआई, श्री तारा रंजन पटनाईक, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, एसईएआई, डॉ. कमलेश मिश्रा, अध्यक्ष, एसईएआई (ओडीशा क्षेत्र), श्री प्रताप रंजन राऊत, मात्स्यकी संयुक्त निदेशक, सचिव, मात्स्यकी एवं एआरडी, ओडीशा सरकार के प्रतिनिधित्व करते हैं, डॉ. जे.के. सुंदरराय, निदेशक, सिफा, भुवनेश्वर, श्री एस.के. जेना, ओएस, निदेशक, निर्यात संवर्धन और विपणन, ओडीशा, श्री बी. श्रीकुमार, सचिव, एमपीईडीए, डॉ. राम मोहन, संयुक्त निदेशक (विपणन), एमपीईडीए, श्री के.वी. प्रेमदेव, उप निदेशक (बा.सं.), एमपीईडीए, श्री के. षण्मुख राव, सीईओ, नाक्सा, काक्किनाडा, सुश्री के. मिश्रा, सहायक निदेशक, ईआईए, भुवनेश्वर ने गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला के सामने स्थित उत्कल चेम्बर ओर कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, नयापल्ली, भुवनेश्वर के सम्मेलन भवन

संकेंद्रित क्षेत्र



△ प्रतिभागियों का परिदृश्य

में आयोजित समारोह में भाग लिया।

कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रभाग, भुवनेश्वर, उप क्षेत्रीय प्रभाग, भुवनेश्वर, उप क्षेत्रीय प्रभाग, बालासोर के अधिकारी, निर्यातक, अग्रणी जलकृषि कृषक, विभिन्न तटीय जिलों से जलकृषि कृषक कल्याण सोसाइटियों के प्रतिनिधि, हैचरी परिचालक/मालिक, राज्य मात्स्यकी विभाग के अधिकारी, ईपी एवं एम, आदि ने भाग लिए। श्री बी श्रीकुमार, सचिव, एमपीईडीए ने गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भुवनेश्वर के गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला एनएबीएल द्वारा आईएसओ/आईईसी 17025 मानकों के तहत मान्यता प्राप्त है और यह प्रयोगशाला भारत के आईईसी और आईएसओ 9001:2008 प्रमाणीकरण द्वारा भी अनुमोदित है।

श्री तारा रंजन पटनाईक, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, एसईएआई और मेसर्स फाल्कन मराइन एक्सपोर्टर्स, भुवनेश्वर के सीएमडी, ने कानूनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सीएए पंजीकरण और एमपीईडीए नामांकन लेने हेतु सभी किसानों से अनुरोध किया।

गणमान्य व्यक्तियों में से, श्री वी पद्मनाभन, राष्ट्रीय अध्यक्ष, एसईएआई, डॉ. कमलेश मिश्र, अध्यक्ष, एसईएआई (ओडीशा क्षेत्र), श्री बी.क. साहू, एमपीईडीए प्राधिकरण के सदस्य और श्री प्रताप रंजन राऊत, संयुक्त निदेशक, मात्स्यकी, ओडीशा सरकार ने इस अवसर पर भाषण दी। प्रयोगशाला प्रभारी ने मेहमानों को प्रयोगशाला के विभिन्न दिया घटकों और उपकरणों के कार्यविधि के बारे में समझाया।

डॉ. एम.के. राम मोहन, संयुक्त निदेशक (विपणन), एमपीईडीए ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

खरीददार-विक्रेता बैठक

श्री बी श्रीकुमार, सचिव, एमपीईडीए ने प्रतिभागियों को क्रेता-विक्रेता बैठक में स्वागत किया। उन्होंने निर्यातकों और किसानों दोनों को आपसी संवाद और करार करने के लिए हुए मंच प्रदान करते हेतु इस तरह की बैठक का आयोजन करने के उद्देश्य को समझाया। यह बीमपी बनाए रखने वाले जलकृषि

क्लस्टर से गुणवत्ता सामाग्री की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए और कृषकों को अपने उत्पाद के लिए सही और आश्वासित मूल्य के लिए विक्रेताओं और खरीददारों दोनों को सक्षम करेंगे। श्री यू. सी. मोहापात्र, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, एमपीईडीए, भुवनेश्वर ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।



△ डॉ. ए. जयतिलक, भा.प्र.से., अध्यक्ष, एमपीईडीए भुवनेश्वर के अद्यतन एमपीईडीए गुणवत्ता प्रयोगशाला को समर्पित करते हुए

कृषकों ने कीमत की उतार-चढ़ाव, इनपुट और कच्चे माल की गुणवत्ता, बर्फ की आपूर्ति आदि पर कुछ शंकाए उठाया। श्री अजया दाश, एक अनुभवी निर्यातक और डॉ. कमलेश मिश्र, अध्यक्ष, एसईएआई (ओ) निर्यातकों के बीच बातचीत की और उनके द्वारा उठाए गए प्रश्नों का समाधान किया। आम तौर पर यह जोर दिया जाता है कि गुणवत्ता वाले और प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प उत्पादन के लिए अनुमोदित हैचरी से पीसीआर परीक्षित गुणवत्ता बीज, एक अच्छी चारा, बेहतर प्रबंधन प्रथा जो रोग प्रकोप को रोक सकता है, और इस प्रकार दवा और रसायनों के उपयोग से बचें। श्री तंबड़ा एन. विष्णु, सहायक निदेशक (ईई), एमपीईडीए, भुवनेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।



△ श्री एल.एन. गुप्ता, भा.प्र.से., अतिरिक्त मुख्य सचिव, एमएसएमई विभाग, ओडीशा ने गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भुवनेश्वर के समर्पण समारोह के दौरान अभिनंदन करते हुए।

सशिमि ग्रेड ट्यूना के ऑनबोर्ड हैंडलिंग पर प्रशिक्षण



▲ NETFISH State Coordinator demonstrating the degutting procedure

‘सशिमि’ का अर्थ है कच्चा मत्स्य, यह प्रीमियम गुणवत्ता वाले कच्चे मत्स्य के पतले स्लाइस से बने एक पारंपरिक जापानी पकवान है। लाल माँस वाले ट्यूना को खासकर सबसे लोकप्रिय सशिमि मत्स्य माना जाता है। केवल उन्हीं मत्स्यों को ताज़ा पैक किया जाता है, ये सशिमि बाज़ारों में निर्यात हेतु उपयुक्त है और ऐसी वास्तविक प्रीमियम गुणवत्ता वाली मत्स्य निर्यात बाज़ार से अच्छी कीमत लाएगी। जागरूकता और मछुआरों के लिए प्रशिक्षण, विशेष रूप से ट्यूना लॉग लाईनिंग में शामिल मत्स्यन कर्मिदल सदस्य, ऑनबोर्ड हैंडलिंग विधियों पर और सशिमि के लिए ट्यूना प्रसंस्करण आदि नेटफिश के संकेद्रित क्षेत्रों में से एक है।

दिनांक 18 और 30 जनवरी 2018 को नेटफिश ने अपने सदस्य एनजीओ, डीएफवाईडबल्यूए के साथ, पुडिमडका,

विशाखपट्टनम में ‘ट्यूना मत्स्य के ऑनबोर्ड हैंडलिंग’ पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए, जो इस क्षेत्र के 24 सक्रिय मछुआरों के लिए फायदेमंद साबित हुए। श्री हनुमंत राव, राज्य संयोजक, नेटफिश ने प्रशिक्षणार्थियों को ऑनबोर्ड पर अनुसरण करने वाले उचित स्वास्थ्य हैंडलिंग विधियों के द्वारा सशिमि ग्रेड ट्यूना का उत्पादन के बारे में समझाया। ग्लोव्स, हथोड़ा, स्पैक, मोनोफिलमेंट नाइलॉन या स्टैनलेस स्टील वायर, ड्रॉप ब्लड चाकू, शार्प चाकू, ब्रश, कोरिंग उपकरण आदि आवश्यक उपकरणों से प्रशिक्षणार्थियों को परिचित कराया गया। बाद में कार्यक्रम के दौरान मत्स्य को मारना, ब्लीडिंग, डी-गिल्लिंग, डी-गट्टिंग, घोल बर्फ में ठंडा करना, संरक्षण और भंडारण आदि पर मछुआरों को व्यक्तिगत परिक्षण दिया गया।



▲ मछुआरों को विभिन्न ट्यूना हैंडलिंग उपकरणों को परिचित कराते हुए।

एमपीईडीए निर्यातोन्मुख जलकृषि फार्म के जीपीएस आधारित डेटाबेस की शुरुआत कर रहा है

एमपीईडीए ने फार्म का पहचान के साथ-साथ उपभोक्ता के हितों को सुरक्षित रखने के लिए निर्यातोन्मुख जलकृषि फार्मों के जीपीएस आधारित डेटाबेस विकसित करने के लिए एक अनूठी पहल शुरू की है। यह अनोखा प्रणाली श्रिम्प तथा अन्य निर्यात योग्य मत्स्य किस्मों को प्रतिबंधित और अवांछित पदार्थों जैसे किसी भी निशान से मुक्ति सुनिश्चित करेगी।

इस योजना के अनुसार, कृषकों के कार्डों में एक अनोखे फार्म पहचान संख्या और त्वरित प्रतिक्रिया कोड प्रदान करके फार्मों के बारे में मूलभूत जानकारी प्रदान करके श्रिम्प, शेलफिश और अन्य निर्यात योग्य मत्स्य किस्मों के उत्पादन में लगे सभी फार्मों को एमपीईडीए द्वारा नामांकित किया जाएगा। दिनांक 25 फरवरी, 2018 को केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एन चन्द्रबाबू नायडू, श्री के



विशाखपट्टनम में साझेदारी शिखर सम्मेलन 2018 में निर्यातोन्मुख जलकृषि फार्मों के अनोखे जीपीएस-आधारित डेटाबेस का शुभारंभ

हरीबाबु, संसद सदस्य, आंध्र प्रदेश और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के उपस्थिति में नामांकित जलकृषि कृषकों को कार्ड वितरित किया।

संकेंद्रित क्षेत्र



△ दर्शकों का एक दृश्य

डॉ. जयतिलक, भा.प्र.से., अध्यक्ष, एमपीईडीए ने कहा कि नामांकन करने से प्रत्येक फार्म/हैचरी इकाई की पहचान कर सकते हैं और सहायता योजनाओं को प्रदान करने के साथ-साथ उनके अनुमार्गाणीयता भी कर सकते हैं। उत्पादन में अवांछित था अनधिकृत पदार्थों का पता लगाने के मामले में नामांकित इकाइयों से उपज का कृषि से अंत-उपभोक्ता तक पता लगाया जा सकता है। फसल पूर्व परीक्षण या पीएचटी स्क्रीन प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों जैसे कि क्लोरेमफेनिकोल और नाइट्रोपुरन को अनुटे आईडी के साथ गोडा जाएगा। यूरोपीय संघ में जलकृषि श्रिम्प के निर्यात हेतु पीएचटी प्रमाण पत्र अनिवार्य है।

डॉ. जयतिलक ने यह भी नोट किया कि यू एस और जापान के संबंध में इस तरह का उपाय लंबी समय तक रहेंगे और ईयू समुद्री खाद्य निर्यात पर कड़ी गुणवत्ता नियंत्रण और माल में प्रतिबंधित प्रतिजैविकी के निशान की जांच करेंगे। नई प्रणाली

मूल्य श्रृंखला के सभी स्तरों पर अनुमार्गनीयता की जानकारी प्रदान करेगी और क्यूआर कोड या बार कोड के माध्यम से डिब्बे / पैक में प्रदर्शन के लिए मुख्य जानकारी को इलेक्ट्रॉनिक के माध्यम से कोडिंग करेंगे। यह अंत-उपभोक्ता को फार्म से हैचरी स्तर तक जानकारी प्राप्त करने में सक्षम करेंगे।

एमपीईडीए ने पहले ही 148,321 हे. के अधीन श्रिम्प कृषि करने वाले 65,595 फार्मों की जीपीएस आँकड़ा एकत्र किया है।



△ डॉ. ए. जयतिलक, अध्यक्ष, एमपीईडीए कृषकों और एमपीईडीए/ नावसा के अधिकारियों के साथ

कुल 195,994 हे. क्षेत्र के 100,000 फार्मों में से 54,165 फार्मों का नामांकन पूरा कर लिया गया है।

कार्ड या नामांकन की वैधता पाँच सालया वैध पट्टा अवधि, जो भी कम हो, के लिए होगी। कार्ड अंग्रेज़ी और प्रासंगिक स्थानीय भाषा में मुद्रित किए जाएंगे।



△ नामांकित जलकृषि किसानों के लिए कार्ड का वितरण

‘जलकृषि में पारिस्थितिकी चिरस्थाइता एवं विकासात्मक गुंजाइशों पर’ प्रशिक्षण कार्यक्रम



श्री पी. ब्रह्मेश्वर राव, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान देते हुए

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा द्वारा कृष्णा जिले के कम्मनमोलु गाँव, नागयालंका मण्डल में ‘जलकृषि में पारिस्थितिकी चिरस्थाइता एवं विकासात्मक गुंजाइशों’ पर तीन दिवसीय सामान्य प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जनवरी 23-25 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कृषकों को जलकृषि प्रजातियों में विशेष जोर देने के साथ-साथ जलकृषि में पर्यावरणीय चिरस्थाइता एवं विकासात्मक गुंजाइशों पर प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम में पाँच महिला प्रतिभागियों सहित 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री कोक्किलीगड्डा वेंकटगिरी, पंचायत अध्यक्ष, कम्मनमोलु गाँव द्वारा किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, श्री बी. नरसिंहा राव, सहायक निदेशक, श्री पी. ब्रह्मेश्वर राव, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा, श्री वी. रत्न प्रकाश, परियोजना सहायक (मात्स्यिकी), केवीके, कानुरु, श्री पी. सुरेश, मात्स्यिकी सहायक निदेशक, अवनिगड्डा, श्री जे वेंकटा रमणा, क्षेत्रीय संयोजक, नाक्सा, श्री जी श्रीनिवासलु, फील्ड पर्यवेक्षक,

क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा द्वारा विभिन्न विषयों पर जैसे कि तालाब की तैयारी, जल और मिट्टी की गुणवत्ता प्रबंधन, गुणवत्ता बीज का चयन, चारा प्रबंधन, श्रिम्प कृषि में प्रोबायोटिक्स का उपयोग, जैव सुरक्षा उपायों, आंध्र प्रदेश में जलकृषि में विविधीकरण और इसकी क्षमता, श्रिम्प कृषि में प्रतिजैविकी का दुरुपयोग, फसल और फसलोत्तर गुणवत्ता प्रबंधन तथा फसल पूर्व जांच और स्वास्थ्य देखभाल पर कक्षाएं चलाई गईं। आखिरी दिन संकाय सदस्यों द्वारा प्रतिभागियों के संदेहों का निवारण किया गया।

श्री कोक्किलीगड्डा वेंकटगिरी ने अपने समापन भाषण में इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एमपीईडीए की सराहना की और भविष्य में इस तरह के और ज्यादा कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया। पंचायत अध्यक्ष और एडीएफ की उपस्थिति में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और छात्रवृत्ति वितरित किए। श्री जी श्रीनिवासलु ने धन्यवाद ज्ञापित किया।



नेल्लूर में श्रिम्प कृषि की वर्तमान स्थिति पर कृषक बैठक



▲ तकनीकी सत्र के दौरान श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा

एमपीईडीए सैटलाइट केंद्र, नेल्लूर ने दिनांक 24 जनवरी, 2018 को नेल्लूर जिले के श्री चामुंडेश्वरी देवी कल्याणा मंडपम, गंगपट्टिनम गाँव, 'नेल्लूर में श्रिम्प कृषि की वर्तमान स्थिति' पर एक कृषक बैठक का आयोजन किया।

बैठक का मुख्य विषय श्रिम्प कृषि में नवीनतम तकनीकी उन्नत का अद्यतन तथा घरेलू उपयोग एवं निर्यात के लिए मत्स्य एवं मात्स्यिकी उत्पादों के बढ़ती माँग को पूरा करने हेतु विविधीकरण की आवश्यकताओं और मुद्दों पर चर्चा करना था। कार्यक्रम में मुख्य रूप से गंगपट्टिनम गाँव से 125 प्रतिभागी करना उपस्थित थे।

श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा ने गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने देश से उच्च गुणवत्ता वाले श्रिम्प के उत्पादन हेतु एमपीईडीए द्वारा किए गए दृढ़ प्रयासों पर जोर दिया।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि यूरोपीय संघ और अमरीका अब जलकृषि उत्पादों की बहुत सख्त निगरानी कर रहे हैं अतः किसानों को हैचरी और कृषि संचालन के दौरान किसी भी अज्ञान निविष्टियों का उपयोग करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए।

कृषक बैठक का उद्घाटन श्री पी. हनुमंता राव, अध्यक्ष, श्री चामुंडेश्वरी देवी अक्वा कृषक क्लब, गंगपट्टिनम तथा श्रिम्प कृषि के अनुभवी द्वारा किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने कृषकों को चिरस्थायी कृषि के संचालन के लिए मार्गनिर्देशन देने हेतु जलकृषि प्रयोगशालाओं के जिम्मेदारी पर जोर दिया। उन्होंने सरकार द्वारा कुछ प्रकार के विनियमन और वित्तीय सहायता प्रदान करने पर भी जोर दिया ताकि प्रयोगशाला का संचालन केवल योग्य प्रयोगशाला तकनीशियनों द्वारा किया जाए, और विश्वसनीय जाँच रिपोर्ट प्रदान करें।



▲ कृषक बैठक के दौरान सभा का दृश्य

श्री पी शबीर खान, सचिव, आंध्र प्रदेश राज्य श्रिम्प कृषक संघ, नेल्लूर ने अपने आशंसा भाषण में प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प के उत्पादन करने के लिए किसानों की बीच जागरूकता पैदा करने हेतु एमपीईडीए द्वारा उठाए गई कदमों की सराहना की, जिससे ज़िपसे गुणवत्ता श्रिम्प उत्पादन में भारत को सर्वोत्तम स्थान पर ले जा सके। उन्होंने उल्लेख किया कि कीमत का उतार-चढ़ाव कृषकों को खासकर छोटे पैमाने के कृषकों को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं और इसका हल खरीददार-विक्रेता से लगातार परस्पर चर्चा और खुला विचार-विमर्श से ही किया जा सकता है। तकनीकी सत्र में प्राधिकरण के सदस्य और मुख्यातिथि श्री

जलकृषि परिदृश्य

सुरेश रेड्डी उपस्थित थे। अपने बधाई भाषण के दौरान, उन्होंने बताया कि हैचरियों को अपने जैव-सुरक्षा उपायों को बनाए रखने के लिए अधिक सतर्क होना चाहिए और मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) का पालन करना चाहिए ताकि जलकृषि किसानों को केवल गुणवत्ता श्रिम्प बीज का उत्पादन और आपूर्ति किया जा सके। उन्होंने आगे कहा कि जलकृषि कृषकों को बाजार में उपलब्ध नकली जलकृषि निविष्टियों पर अधिक ध्यान देना चाहिए जो बाद में हमारे श्रिम्प निर्यात व्यवसाय को नुकसान पहुँचा सकता है।



श्री पी. हनुमंत राव, अध्यक्ष, श्री चामुंडेश्वरी देवी अक्वाफार्मर्स क्लब, गंगापट्टिनम द्वारा कृषक बैठक का उद्घाटन करते हुए

डॉ. पी हरीबाबु, प्रोफेसर, एसोसिएट डीन, मात्स्यिकी कॉलेज, मुत्तुकूर, नेल्लूर ने तकनीकी सत्र का संचालन किया। उन्होंने जलकृषि में रोग प्रबंधन और जैव-सुरक्षा पर एक विस्तृत संवादात्मक कक्षा चलायी जहाँ एक सफल फसल के लिए सभी तकनीकी एवं प्रबंधन पहलुओं पर चर्चा की गई। श्री अर्चिमान लाहिडी ने अपने प्रस्तुति में फार्म नामांकन के महत्व एवं कल्चर्ड श्रिम्प के अनुमार्गणीयता पर भी जोर दिया। उन्होंने यह भी बताया कि निर्यात हेतु प्रतिजैविकी/रासायनिक मुक्त श्रिम्प उत्पादन की बड़ी चुनौती का समर्थन करने के लिए सभी कृषकों



श्री एस. सुरेश रेड्डी, एमपीईडीए के प्राधिकरण सदस्य, आंध्र प्रदेश सभा को संबोधित करते हुए

को एमपीईडीए के साथ अपने फार्म का नामांकन (यदि अबतक नहीं किया गया हो) करना चाहिए। उन्होंने इस पर भी प्रकाश डाला कि कृषकों को जलकृषि निविष्टियों के उपयोग करने में बहुत सतर्क रहना चाहिए क्योंकि प्रमुख आयातित देशों में उनके नमूना प्रतिशत में वृद्धि हुई है। भारत को अच्छी गुणवत्ता वाले श्रिम्प के उत्पादन और निर्यात में सर्वोच्च स्थान पर पहुँचाने के लिए उन्होंने जलकृषि किसानों एवं हैचरी संघ का हस्तक्षेप एवं पूर्ण समर्थन का भी माँग की।

श्री पी ब्रह्मेश्वर राव, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा ने 'भारत से श्रिम्प निर्यात में प्रमुख चुनौतियाँ, विषय प्रस्तुत किया। उन्होंने संकेत किया है कि संभावित समुद्री खाद्य सुरक्षा खतरों या प्रतिजैविकी दवाओं के मुद्दों के कारण मुख्य रूप से आयातित देशों से अस्वीकार कर दिया गया है। लेकिन कृषकों को आयात करने वाले देशों द्वारा भारतीय श्रिम्प के अस्थायी आस्थगन / प्रतिबंध पर भी सावधान रहना चाहिए और इस संदर्भ में व्यापार परिप्रेक्ष्य में स्वच्छता और फाइटो सैनिटरी (एसपीएस) पर कोई समझौता नहीं करना चाहिए जहाँ कोई कीट या रोग पैदा करनेवाला कारक नहीं होनी चाहिए जिससे मानव स्वास्थ्य पर सख्त उपाय लेने वाले आयातित राज्यों में प्रवेश करने में प्रतिबंध लगा सकता है। अतः एक चिरस्थायी श्रिम्प निर्यात

के लिए, हमें हमेशा जैव सुरक्षित पर्यावरण में पालन-पोषित किसी भी नकली रसायन या प्रतिजैविकी का उपयोग किए बिना रोग मुक्त बीज का चयन करना चाहिए और मानक संचालन प्रक्रियाओं का पालन करके प्रसंस्कृत और निर्यात किया जाना चाहिए।

श्री पी. श्रीनिवासा राव, सहायक परियोजना प्रबन्धक, आरजीसीए-एमपीईडीए ने अपनी प्रस्तुति के दौरान विविधीकरण के लिए कई निर्यातोन्मुख जलकृषि प्रजातियों को पेश करने हेतु आरजीसीए द्वारा उठाए गए कदम के बारे में विस्तार से स्पष्ट किया। उम्मीदवार प्रजातियों के रूप में सिल्ला सेराट्टा जैसे केकड़ा कृषि की गुंजाइश एवं क्षमता पर भी उन्होंने जोर दिया।

अंतिम सत्र का संचालन श्री टी. नंदकिशोर, क्षेत्रीय समन्वयक, नाक्सा द्वारा किया गया। उन्होंने चिरस्थायी श्रिम्प कृषि के लिए सोसाइटी गठन की आवश्यकता और उनकी संभावनाओं पर जोर दिया। उन्होंने नाक्सा अपने क्षेत्र प्रबन्धकों के माध्यम से प्रदान की गई विभिन्न योजनाओं और समर्थन पर भी उल्लेख किया। डॉ. के गणेश, सहायक निदेशक, एमपीईडीए सैटलाईट केंद्र, नेल्लूर की धन्यवाद ज्ञापन के साथ कृषक बैठक का समापन हुआ।

बेलगाम के चिकोड़ी में आयोजित पर्यावरणानुकूल, चिरस्थाई जलकृषि में प्रशिक्षण



श्री विजयकुमार सी यारगल, उप निदेशक, एमपीईडीए प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

कर्नाटक के बलगाम जिले में जलकृषि का विकास एवं परिचालन, कुछ छोटे पैमाने पर प्रयास करने वालों को छोड़कर अत्यंत बुनियादी चरण में है। बेलगाम जिलेको गन्ने और बाजरा जैसे कृषि फसलों के साथ-साथ तीन प्रमुख नदी भी प्रदान की है। चूँकि, गन्ने की खेती कई अधिक अवधि तक प्रमुख नकदी फसल के रूप में होने के कारण, जैविक रसायनों जैसे कीटनाशकों और कीटाणु नाशकों के उपयोग से प्राकृतिक मिट्टी अम्लता और कम खारी हो जाती है।

जैसाकि इस कृषि भूमि को जलकृषि के अलावा अन्य किसी कृषि फसल का उपजाऊ हेतु उपयोग नहीं किया जा सकता है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, दिनांक जनवरी 3 से 5, 2018 तक कर्नाटक के चिकोड़ी, बेलगाम जिले में 'पर्यावरणानुकूल तथा चिरस्थाई जलकृषि' पर एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सहायक निदेशक, मात्स्यिकी द्वारा नामित कुल 19 कृषकों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। श्री विजयकुमार सी यारगल, उप निदेशक ने स्थल चयन और तालाबों के निर्माण पर एक कक्षा चलाई। उन्होंने एल.वन्नामीश्रिम्प कृषि में जलाशय प्रणाली का महत्त्व, एचएसीसीपी का पालन और मूल्यवर्धित समुद्री

उत्पादों के बारे में उल्लेख किया।

श्री संजय अरकरे, सहायक निदेशक, मात्स्यिकी, चिकोड़ी ने बलगाम जिले के चिकोड़ी, राईबाग, अथनी तालुका के वर्तमान स्थिति और मात्स्यिकी परिचालन की संभावनाओं पर विस्तृत विवरण दिया। इस प्रभाग के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, श्री जी रामर ने तालाब की तैयारी, जल गुणवत्ता, श्रिम्प कृषि में विभिन्न प्रोबयोटिक्स का उपयोग, बीज संभरन, चारा और चारा प्रबंधन और पैदावार पर चर्चा की।

चिकोड़ी से 25 किलोमीटर दूर स्थित एक मत्स्य फार्म में संदर्शन की व्यवस्था की गई। फार्म पंगेशियस से भंडारित किया गया था जहाँ प्रशिक्षणार्थियों को भारतीय प्रमुख कार्प और भारत में विदेशी प्रजातियों के फार्म परिचालन के बारे में संक्षेप में जानकारी दी गयी। सीबास, मैंग्रोव कीचड़ केकड़ा, और तिलापिया जैसे विभिन्न कृषि योगी प्रजातियों पर एक वीडियो फिल्म पेश की गई।

श्री जी टी नायक, मात्स्यिकी उप निदेशक और श्री वसंत हेडगे, मात्स्यिकी वरिष्ठ सहायक निदेशक समापन समारोह में उपस्थित थे। मुख्यातिथि द्वारा प्रशिक्षण भागीदारी प्रमाण पत्रों के वितरण के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ।

There's no
seafood as

Irresistible as Indian Seafood

From the sparkling Indian seas comes the
finest seafood in the world. Enjoy it in
abundance throughout the year.

*You haven't tasted the best seafood,
if you haven't tasted Indian seafood.*



The Marine Products Export Development Authority

(Ministry of Commerce & Industry, Government of India)

MPEDA House, Panampilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India

Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: ho@mpeda.gov.in

कारवार के बाड़ गाँव के कृषकों के लिए “पर्यावरणानुकूल श्रिम्प कृषि” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



▲ फील्ड संदर्शन के दौरान प्रशिक्षणार्थियों का परिदृश्य

कर्नाटक के उत्तराखंड, कारवार के बाड़ गाँव के डॉ. अंबेडकर भवन हॉल में एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शहर नगरपालिका परिषद, कारवार के अनुरोध के अनुसार आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तर कन्नड़ जिले के के बाड़, नंदनगड्डा, कारवार से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री देवानन्द कनेकर, अध्यक्ष, अ.जा./अ.ज.जा. समुदाय, कारवार, ने किया। प्रशिक्षण के दौरान स्थल चयन, तालाब संरचना, निर्माण, जैविक पहलुओं, श्रिम्प कृषि में जैव-सुरक्षा एवं बेहतर प्रबंधन प्रथाएँ, विविधीकरण-केकड़ा कृषि, सीबास कृषि, तिलपिया कृषि, अर्थशास्त्र एवं वित्तीय योजनाओं के बारे में चर्चा की गई। श्री एस.एम.शिरोडकर, कनिष्ठ तकनीकी



▲ प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र और छात्रवृत्ति का वितरण

अधिकारी, श्री विजयकुमार यलिंगर, उप निदेशक, एमपीईडीए और श्री वेंकटरामन हेगडे, उप निदेशक, श्री श्रीपाद कुलकर्णी, एएफडीओ, राज्य मात्स्यिकी विभाग ने कक्षाओं का संचालन किया।

व्यावहारिक तरीकों एवं फार्म परिचालकों/तकनीशियनों के साथ बातचीत आदि का अवलोकन हेतु कृषकों के लिए दिनांक 18 जनवरी को कनसगिरी, कडवाड, मडिबाग गाँव के श्रिम्प फार्मों में संदर्शन का आयोजन किया गया।

श्रीमती लीलाभाई थानेकर, उपाध्यक्ष, शहर नगरपालिका परिषद, कारवार जनवरी 19 को आयोजित समापन समारोह में मुख्यातिथि थी। उन्होने अ.जा./अ.ज.जा. के लिए उनके पास ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हेतु एमपीईडीए द्वारा की गई प्रयास की सराहना की। उन्होने प्रशिक्षणार्थियों को जलकृषि को शुरू करने के लिए सोसाइटी या क्लब का गठन करने की सलाह दी। श्री विजयकुमार यारगल, उप निदेशक, एमपीईडीए ने भी एमपीईडीए की ओर से सभी समर्थन का भी आश्वासन दिया।

श्री विथल लांजेकर और श्रीमती रूपा हुलसवार ने कृषकों की ओर से एमपीईडीए को धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि प्रशिक्षण के द्वारा उन्हें जलकृषि में नई तकनीकों/विकासों को सीखने में मदद मिली। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र और छात्रवृत्ति वितरित किया गया। श्री एस.एम. शिरोडकर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए के धन्यवाद ज्ञापन के साथ तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम समाप्त हो गया।

बेल्गावी जिले के अथानी के कृषक चिरस्थाई कृषि के लिए सुसज्जित



△ मत्स्य का पैदावार

कर्नाटक के बेल्गावी जिले के अथानी को गैर उपजाऊ और कम नमकीन भूमि के रूप में जाना जाता है, जहाँ पर्याप्त जल स्रोत उपलब्ध है। इसे ध्यान में रखते हुए, चिकोडी के मात्स्यिकी विभाग ने जलकृषि में इच्छुक कृषकों को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अनुरोध किया।

अनुरोध के आधार पर, एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, कारवार ने अथानी के कृषकों के लिए 'पर्यावरणानुकूल तथा चिरस्थाई जलकृषि' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 15 से 17 फरवरी तक एमआईसीई कम्प्युटर इंस्टीट्यूट हॉल में आयोजित किया गया।



△ प्रशिक्षणार्थियों का एक दृश्य

श्री जी रामर तथा श्री एस.एम. शिरोदकर, एमपीईडीए के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारियों एवं चिकोडी के राज्य मात्स्यिकी अधिकारियों द्वारा बीज चयन, भंडारण, जल गुणवत्ता, चारा प्रबंधन, श्रिम्प की पैदावार, तिलापिया कृषि, सीबास कृषि जैसे जलकृषि विविधीकरण, जलाशय में कार्प कृषि/पॉली कल्चर आदि पर कक्षाएँ

चलाई। समुद्री शैवाल, मैंग्रोव कीचड़ केकड़ा और तिलापिया जैसे विभिन्न कृषि योग्य प्रजातियों पर एक विडीओ फिल्म का भी प्रस्तुतीकरण किया गया।



△ श्री संजय अरकेरी, एएफडीओ, मात्स्यिकी विभाग, चिकोडी ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र और छात्रवृत्ति वितरित करते हुए

प्रशिक्षणार्थियों को मत्स्य फार्म एवं जलाशयों के संदर्शन का आयोजन किया गया जहाँ प्रशिक्षणार्थियों को भारतीय प्रमुख कार्प तथा भारत में विदेशी प्रजातियों के फार्म परिचालन पर एक संक्षिप्त विवरण दिया गया।

चिकोडी के मात्स्यिकी सहायक निदेशकश्री संजय अरकेरी मुख्यातिथि थे। श्री सुरेश पंडावे और अन्य प्रतिभागियों ने ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु एमपीईडीए के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जो कि यह जलकृषि में उनका ज्ञान समृद्ध कर दिया। सभी 17 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र एवं छात्रवृत्ति वितरित की गई। श्री एस. एम. शिरोडकर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्रिम्प कृषि में बेहतर प्रबंधन प्रथाओं पर प्रशिक्षण, जलकृषि में प्रजाति विविधीकरण पर प्रशिक्षण



△ कृषकों का दृश्य

एमपीईडीके क्षेत्रीय प्रभाग, भुवनेश्वर ने खारिनसी एवं आसपास के क्षेत्रों के अ.जा./अ.ज.जातियों के समुदायों के किसानों के बीच श्रिम्प कृषि एवं विविधता प्रौद्योगिकियों का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। दिनांक 6 से 8 फरवरी 2018 तक रेड क्रॉस सोसाइटी हॉल, खारिनसी गाँव, केंद्रापड़ा जिला में आयोजित प्रशिक्षण का विषय था 'जलकृषि में बेहतर प्रबंधन प्रथाएँ (बीएमपीस) एवं जलकृषि में प्रजाति विविधीकरण'।

आदि पर कक्षा चलाई।

श्री एस. दुर्गा राव, क्षेत्र पर्यवेक्षक ने तालाब की तैयारी, जल गुणवत्ता प्रबंधन एवं मिट्टी प्रबंधन, चारा एवं चारा प्रबंधन, पीसीआर तनाव परीक्षण द्वारा बीज का चयन, वायुजलानुकूलन, भंडारण, रोग नियंत्रण प्रणाली, जैव-सुरक्षा उपायों आदि पर विवरण दिया। प्रशिक्षणार्थियों को जलकृषि में विविधता जैसे कि कीचड़ केकड़ा कृषि, तिलापिया कृषि आदि के बारे में अवगत कराया गया। कृषकों को 'चिरस्थायी जलकृषि के लिए बेहतर प्रबंधन प्रथाएँ' पर एक पुस्तक प्रदान की गई। उनके बीच जलकृषि में प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों के प्रतिकूल प्रभावों पर पुस्तिकाएँ, तालाब आँकड़ा रिकार्ड बुक आदि वितरित किया गया।



△ श्री एस. दुर्गा राव, फस. एस. कक्षा का संचालन करते हुए और कृषकों का दृश्य

समापन सत्र का मुख्यातिथि श्री शितनाथ बेहरा, मात्स्यकी विभाग, केंद्रपारा के अतिरिक्त सहायक मात्स्यकी अधिकारी थे। उन्होंने राज्य सरकार के जलकृषि योजनाएँ, सीए का पंजीकरण आदि के बारे में बताया। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र और छात्रवृत्ति वितरित किए गए।

श्री यू सी मोहापात्र, उप निदेशक ने कार्यक्रम का उदघाटन किया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को उन्नत तकनीक सीखकर निर्यात हेतु बेहतर जलकृषि उत्पाद का उत्पादन करने की सलाह दी।

श्री नारायण हल्दर, प्रमुख कृषक ने कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एमपीईडीके को धन्यवाद ज्ञापित किए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अ.जा./अ.ज.जा. के 20 श्रिम्प कृषकों ने भाग लिया। इन तीन दिनों के दौरान पढ़ाए गए तकनीकी पहलुओं का सारांश में प्रशिक्षणार्थियों को एमपीईडीके / राज्य मात्स्यकी अधिकारियों के साथ चर्चा का भी व्यवस्था की थी।

पहले दिन जलकृषि, फार्मिंग प्रणाली, नवीनतम विकास और रुझान, एमपीईडीके की योजनाएँ और सेवाएँ साथ ही साथ टाइगर श्रिम्प, एल. वन्नामी के जैविक पहलुओं, प्रतिजैविकी मुद्दे आदि प्रशिक्षणार्थियों के सामने पेश किया गया। अगले दिन, श्री नरेश तांबड़ा, सहायक निदेशक ने स्थल चयन, श्रिम्प तालाबों का निर्माण, एमपीईडीके के साथ जलकृषि फार्मों का नामांकन और श्रिम्प कृषि के अर्थतंत्र

श्री सुरेश मोहंती, लस्कर, क्षेत्रीय प्रभाग, भुवनेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

उच्चतम मत्स्यपकड़ - विश्व स्तर पर कैप्चर मात्स्यिकी पर संघात : एफ ए ओ

‘संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया है कि उच्चतम मत्स्य पकड़ के कारण समुद्र और अंतर्देशीय जल से कैप्चर मात्स्यिकी का वैश्विक स्तरपर समतल या गिरावट का अनुमान किया है। फरवरी में एफएओ द्वारा ‘द स्टेट ऑफ वर्ल्ड फिशरीज़ एंड अक्वाकल्चर’ के वर्ष 2016 के अंक में यह रिपोर्ट किया गया है कि वर्ष 2025 तक कैप्चर मात्स्यिकी उत्पादन का अनुमान केवल 1% है, क्योंकि अधिकांश समुद्र से पूरी तरह से मत्स्य का पकड़ हो जाएंगे और अतः उत्पादन बढ़ाने की कोई संभावना नहीं है। भारत जैसे देशों में अस्वीकृत पकड़ और इनपुट लागत में वृद्धि हेतु मत्स्यन की उच्च लागत ने लाखों मछुआरों को विपत्ति में धकेलने की संभावना है। मात्स्यिकी और जलकृषि दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए खाद्य, पोषण, आय और आजीविका के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

रिपोर्ट में यह भी है कि विश्व के प्रति व्यक्ति मत्स्य की आपूर्ति 2014 में 20 किलोग्राम के एक नए उच्चतम रिकार्ड पर पहुँच गया है, जलकृषि में जोरदार वृद्धि के लिए धन्यवाद, जो अब मानव उपभोग के लिए सभी मत्स्यों का आधा प्रतिशत प्रदान करता है, और मात्स्यिकी प्रबंधन में सुधार के कारण कुछ मत्स्य भंडारण में थोड़ा सुधार आया है। वर्ष 2014 में वैश्विक स्तर

पर कैप्चर मात्स्यिकी उत्पादन 93.4 मिलियन टन था, इनमें से 81.5 मिलियन टन समुद्री जल से और 11.9 मिलियन टन अंतर्देशीय जल से मिला था।

वैश्विक स्तर पर वर्ष 2014 में मत्स्यन यानों की कुल संख्या 4.6 मिलियन अनुमानित की गयी, जो 2012 के आँकड़े के बहुत करीब है। एशिया के फ्लीट सबसे बड़ा था, 3.5 मिलियन यान सहित वैश्विक फ्लीट के 75%। एफएओ रिपोर्ट करता है कि 1950 के प्रारंभ से, 1988 तक एञ्चोवेटा रोज के बिना ग्लोबल पकड़, 78 मिलियन टन से अधिक हो गए। इसके बाद, सोवियत संघ के विघटन के बाद दूरवर्ती-जल मत्स्यन कार्यकलापों में उल्लेखनीय बाजार कमी को दर्शाते हुए, कुछ उतार-चढ़ाव के बावजूद, पकड़ का स्तर बंद हो गया।

वर्ष 2003 से 2009 तक कुल पकड़ अंतर वार्षिक परिवर्तन के साथ पूर्ण राशि में कभी 1% से अधिक न दर्ज करते हुए असाधारण रूप से स्थिर रहे। आखिर, 2010 से वर्ष 2014 में एक नई अधिकतम पहुँच तक, वैश्विक स्तर पर 78.4 मिलियन टन एञ्चोवेटा के पकड़ के साथ प्रत्येक वर्ष में मामूली वृद्धि हुई।

www.financialexpress.com



मछुआरों को सीधे ग्राहक तक पहुँचने के लिए एक एप

मछुआरों को मध्यस्थों पर निर्भर न करते हुए आपके पकड़ को ऑनलाइन बेचने के लिए सुसज्जित करने के उद्देश्य से केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने एक बहु विक्रेता ई-कॉमर्स वेबसाइट और एक मोबाइल एप तैयार किया है।

तटवर्ती समुदाय के आय में सुधार लाने के उद्देश्य से सीएमएफआरआई ने क्लाइमेट रेसिलिएंट एग्रिकल्चर (एनआईसीआरए) परियोजना के अधीन “मराइनफिशसेल्स” एपको विकसित किया गया।

एनआईसीआरए परियोजना के प्रमुख अन्वेषक



श्री पी यू ज़क्करिया ने कहा, “शुरुआत में, यह सेवाएँ एर्णाकुलम जिले में ही उपलब्ध होंगी और अन्य भागों में इस पहल की सफलता के अनुसार बाद में विस्तारित की जाएगी”। भुगतान केवल कैश ऑन डेलीवेरी मोड पर उपलब्ध है और मध्यस्थों को अपने लाभ का शेर न देकर लाभ को सीधे मछुआरों और कृषक समूहों के बीच सहभाजित करेंगे। पोर्टल बहु विक्रेताओं और उपभोक्ताओं का एक इंटरफेस है जिसमें सीएमएफआरआई उनके बीच प्रशासनिक भूमिका निभा रहा है।

मछुआरे और मत्स्य कृषक जो अपनी पकड़ और

मत्स्य को ऑनलाइन में चाहते हैं, उनको एसएचजी को गठित करना है तथा इस मंच पर पंजीकृत करना है। विभिन्न मछुआरे एसएचजी अपने बिक्री उत्पादों के आधार पर विक्रेताओं के रूप में पंजीकृत कर सकते हैं और अपने स्टॉक उपलब्धता का अद्यतन भी कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि सीएमएफ़आरआई ने मत्स्य कृषकों और मछुआरों को ई-कॉमर्स वेबसाइट और मोबाइल एप से परिचित कराने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने के बाद ही परीक्षण बिक्री

की थी।

श्री रोजित गिरीन्द्रन, एनआईसीआरए परियोजना के अनुसंधान सहयोगी, जिन्होंने यह वेबसाइट और मोबाइल एप को विकसित किया था, ने कहा कि, प्रत्येक पंजीकृत मत्स्य विक्रेताओं को अद्वितीय लॉगिन प्रत्यापक प्रदान किए जाएंगे, जिसके माध्यम से वे अपने उत्पाद विवरण दे सकते हैं। वेब पोर्टल और मोबाइल एप के माध्यम से ऑनलाइन बिक्री दो हफ्तों के अंदर परिचालित होगी।

- www.thehindubusinessline.com



सीएमएफ़आरआई 5000 मछुआरों को खुला समुद्री पिंजड़ा कृषि में प्रशिक्षित करेंगे

ब्लू क्रान्ति की एक चरण के रूप में, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफ़आरआई) ने भारतीय जल में खुला समुद्री पिंजड़े की खेती को बढ़ावा देने हेतु एक प्रमुख परियोजना शुरू की है। सीएमएफ़आरआई ने सभी समुद्र तटीय राज्यों में खुला समुद्री पिंजड़ा कृषि पर मछुआरों को प्रशिक्षित करने हेतु परियोजना का पहला चरण शुरू किया है ताकि कैचर मात्स्यिकी में हुए ठहराव को मद्देनजर रखते हुए समुद्री जलकृषि को बढ़ावा दे सकें। परियोजना की परिकल्पना में राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड से लगभग 1 करोड़ रु. के वित्तीय सहायता से देश भर के 5,000 मछुआरों को प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करना है।

श्री ए गोपालकृष्णन, सीएमएफ़आरआई के निदेशक के अनुसार, पिंजड़ा मत्स्य कृषि तकनीक तालाबों में किए जाने वाले मत्स्य कृषि के सामान्य तरीकों की तुलना में 70 गुना अधिक उत्पादन देती है। समुद्री मत्स्यों की परंपरागत तालाब कृषि से औसतन 0.5 कि.ग्राम/एम³ (5000 कि.ग्र./हे.) उत्पादन होता है, जबकि पिंजड़ा कृषि से 35 कि.ग्राम/एम³ उत्पादन प्रदान किया जाता है।

पिंजड़ा मत्स्य कृषि को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक मत्स्य बीज की कमी की जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सीएमएफ़आरआई ने पहले ही एनएफ़डीबी से 9 करोड़ रुपए के वित्तीय सहायता के साथ पिंजड़े कृषि के लिए उपयुक्त उच्च मूल्य वाले समुद्री

मत्स्यों के एक ब्रूड बैंक स्थापित करने हेतु काम शुरू कर दिया है।

श्री एस महेश, उप निदेशक मात्स्यिकी, जिन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन किया, ने कहा कि राज्य मात्स्यिकी विभाग ने सीएमएफ़आरआई के तकनीकी समर्थन के साथ केरल के समुद्री जल में पिंजड़ा मत्स्य कृषि को बढ़ाने की योजना तैयार की है।

सीएमएफ़आरआई के समुद्री जलकृषि प्रभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन किया जा रहा है। इमेल्टा जोसफ, प्रभाग प्रमुख ने कहा कि मत्स्य की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए देश को खुला समुद्री पिंजड़ा कृषि जैसे समुद्री जलकृषि शुरू करना चाहिए। यह परिकल्पित किया जाता है कि 2030 तक, विकासशील और विकसित राज्यों में मत्स्य का उपभोग क्रमशः 57 प्रतिशत और 4 प्रतिशत तक बढ़ने की उम्मीद है।

समुद्री जल में पिंजड़े कृषि के लिए कोबिया, सीबास, ग्रूपर, स्नैप्पर, मुल्लेट, लॉब्सटर और पर्ल स्पॉट आदि प्रजातियाँ बेहद उपयुक्त हैं। उन्होंने यह भी कहा कि एक बार राष्ट्रीय समुद्री जलकृषि नीति अधिसूचित हो जाए और निकट भविष्य में देश में लागू हो जाए तो समुद्री पिंजड़ा कृषि को अधिक बढ़ावा मिलेगी।

- www.thehindubusinessline.com



तिलापिया ओड़ीशा के मत्स्य कृषकों को आकर्षित करती है

आनुवांशिक रूप से बेहतर कृषित तिलापिया (गिफ्ट) मत्स्य किस्म राज्य में मत्स्य कृषकों के बीच लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। प्रोटीन से समृद्ध ताजे पानी की यह मत्स्य प्रजातियाँ, इसकी सुनिश्चित बेहतर लाभ के परिणामस्वरूप अधिक कृषक अब इस कृषि की ओर आकर्षित हो रहे हैं।



राज्य सरकार के मात्स्यिकी विभाग ने विश्व मत्स्य संगठन के साथ तकनीकी सहयोग के साथ ओड़ीशा में तिलापिया मत्स्य कृषि को बढ़ावा देने हेतु कार्यक्रम शुरू कर दिया है। यह परियोजना मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देने और कृषकों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू की गई है और अधिकारियों ने दावा किया है की उनका प्रयास वांछित परिणाम पैदा कर रहे हैं।

यह प्रजाति रोग प्रतिरोधी है अतः इसकी कृषि कम जोखिम वाली है।

एक एकड़ के तालाब में लगभग 3000 किलोग्राम की तिलापिया किस्मों का उपज कर सकता है। “एक एकड़ तालाब में तिलापिया कृषि हेतु उत्पादन की कुल लागत 180 लाख रुपए हैं, जबकि कृषित मत्स्य 3 लाख रुपए में बेचा है।” कृषक प्रति एकड़ 1.20 लाख रुपए का लाभ कमाता है। श्री अरुण पडियार, परियोजना प्रबन्धक ने कहा कि इसके अलावा, चूंकि मत्स्य चार से पाँच महीने में परिपक्व हो जाता है, अतः कृषक प्रति वर्ष दो उपज का पैदावार कर सकता है।

यह परियोजना लगभग पाँच महीने पहले प्राथमिक आधार पर कटक जिले के निश्चिन्तकोइली में शुरू की गई। निश्चिन्तकोइली के बेरहामपुर गाँव के दो कृषकों ने 80 डेसिमेल से अधिक भूमि में फैले तालाबों में तिलापिया मत्स्य किस्म की कृषि की थी।

कृषकों को कृषि के लिए 0.14 ग्रा म वजन वाले मत्स्य बच्चे प्रदान की गई और पाँच महीने की अवधि में प्रत्येक मत्स्य 850 ग्राम तक बढ़ी। वर्ल्डफिश के एक अधिकारी त्रिलोचन स्वाइन ने कहा, दोनों कृषकों को बम्पर लाभ प्राप्त किया है।

तिलापिया मत्स्य कृषि से अर्जित लाभ, वर्तमान मत्स्य किस्मों से अर्जित कमाई से काफी अधिक है। मत्स्य किस्म ने उसके ग्राहकों के बीच एक सफलता प्राप्त किया है जोकि यह पौष्टिक, रसीला और एक हड़डी वाला है। “इसके फायदे को हाईलाईट करके हम कृषकों के बीच इस मत्स्य किस्म के बारे में जागरूकता पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं।” श्री पडियार ने कहा कि आकर्षक रिटर्न निश्चित रूप से तिलापिया कृषि करने के लिए और अधिक किसानों को आकर्षित करेगा।

इन दो किसानों के सफलता की कहानियों के बारे में जानने के बाद, सात जिलों के 30 कृषकों ने तिलापिया मत्स्य कृषि शुरू किया है। अधिकारियों के अनुसार, तिलापिया की विशेषता छोटी अवधि में उच्च उपज, कृषि करने के लिए आसान भी है।

- www.thehindubusinessline.com



मत्स्य ड्रायर के वितरण हेतु त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर

आईसीएआर केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफटी), कोचीन ने मशरूम कल्टीवेटर स्वयं सहायक समूह, कासरगोड़ को 10 किलो क्षमता वाले विद्युत ड्रायर वितरित करने के लिए आईसीएआर-सीआईएफटी में 1 फरवरी, 2018 को कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), आईसीएआर-केंद्रीय वृक्षारोपण फसल अनुसंधान संस्थान (सीपीसीआरआई), कासरगोड़ और मशरूम कल्टीवेटर स्वयं सहायक समूह, कासरगोड़ के साथ

एक समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। मत्स्य और मत्स्य उत्पादों और अन्य कृषि वस्तुओं के संरक्षण और मूल्यवर्धन के लिए ड्रायर का उपयोग कर सकते हैं।

डॉ. आर. चंद्रबाबू, कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिशूर, केरल, डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन, डॉ. शुशीला मैथ्यू, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, जैव



मशरूम कल्टीवेटर्स स्व-सहायता समूह, कासरगोड के लिए मत्स्य ड्रायर वितरण हेतु एमओए का आदान-प्रदान

रसायन और पोषण विभाग, आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन, डॉ. मनोज पी. सैमुएल, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, अभियांत्रिकी प्रभाग, आईसीएआर-सीआईएफटी प्रभाग, कोचीन, डॉ. टी.एस. मनोजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक, केवीके, आईसीएआर-सीपीसीआरआई, कासरगोड और श्री पांडुरंगा, मशरूम कल्टीवेटर्स स्वयं सहायक समूह, कासरगोड के उपस्थिति में समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

-CIFT 



निदेशक एवं संकाय के साथ प्रशिक्षणार्थी

आईसीएआर-सीआईएफटी में आयोजित प्रतिजैविकी अवशेष जाँच पर प्रशिक्षण

मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण खाद्य उत्पादों (जलकृषि, डेयरी, पॉल्ट्री आदि) में प्रतिजैविकी अवशेष, आयातकों और उपभोक्ताओं के लिए एक बड़ी चिंता की बात बन गई है। अतः उपभोक्ताओं की सुरक्षा हेतु इसका विनियमन, निगरानी और जाँच बहुत ज़रूरी है। इस परिप्रेक्ष्य में दिनांक 26 फरवरी से 2 मार्च, 2018 तक आईसीएआर-सिफ्ट, कोचीन में आईसीएआर-सीआईएफटी और आरआईकेआईएलटी विश्वविद्यालय, नेथरलैंड के साथ संयुक्त रूप से भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएएसआई) ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था। सूक्ष्मजीववैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करके प्रतिजैविकी अवशेष विश्लेषण पर आईसीएआर-सीआईएफटी, ईआईए और केरल के राज्य विभागों के कुल 10 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया। डॉ. मारिएल पिक्केमाट और श्रीमती विल्मा ड्रिस्सेन विशेषज्ञ प्रशिक्षक थे। प्रशिक्षण में सिद्धांत और प्रायोगिक सत्रों के साथ-साथ हैंड-ऑन अभ्यास भी संरचित किया गया।

यह प्रशिक्षण मुख्य रूप से विनिर्दिष्ट जीवाणु तनाव का उपयोग करके माइक्रोबियल प्लेट्स तकनीक द्वारा प्रतिजैविकी अवशेषों की जाँच पर केन्द्रित है। □-लैक्टम (माइक्रोकोकस ल्यूटस एटीसीसी 9341), टेट्रासाईक्लिनस (बैसिल्लस सेरेकस एटीसीसी 11778), क्विनोलोन यर्सिनिया रकेरी एनसीआईएम 13282), सल्फोनामिड्स (बैसिल्लस पुमिलस सीएन 607) और एमिनोग्लाइकोसाइड्स (बैसिलस सबिलिस बीजीए) आदि विचाराधीन प्रतिजैविकी समूह थे। प्रशिक्षण के दौरान उपयोगित किए गए नमूना मैट्रिक्स मुर्गी (कृषित) और मत्स्य (प्रकृतिकृत) था। पाठ्यक्रमों में मानकों की गणना और तैयारी शामिल थी, अन्य नियमित कार्यक्रमों के साथ-साथ नमूना तैयारी और परिणामों की व्याख्या की गई, जो रोचक थी।

प्रतिभागियों को इनोकुलम और मीडिया आदि के तैयारी के बारे में सिखाया गया। कभी-कभी परिणाम भ्रामक होने के कारण परख प्रदर्शन बड़ी चुनौती थी। पीएच, इनोकुलम परिमाण, बफर

मात्रा आदि परीक्षण की संवेदनशीलता को प्रभावित कर सकती है। कभी-कभी स्पाइक नियंत्रण नमूने में प्रतिजैविकी की उपस्थिति परख परिणामों को प्रभावित करती है और इसे प्रति-परीक्षण करने की ज़रूरत पड़ती है।

पाठ्यक्रम के दौरान पशु उत्पादों पर अवशेषों के लिए खाद्य सुरक्षा विनिमयन, पहचान, प्रतिजैविकी की पुष्टि और मात्रा के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई। वैधीकरण (ईयू निर्णय

2002/657) और प्रमाणीकरण बारे में भी चर्चा की गई। गुणवत्ता नियंत्रण, कठोरता परीक्षण और अन्य वैकल्पिक तरीकों और उनकी सीमा जैसे सैद्धांतिक पहलुओं पर चर्चा की गई। प्रशिक्षणार्थियों ने यह अवलोकन किया कि कार्यक्रम बहुत उपयोगी था और इससे जो ज्ञान प्राप्त हुआ भविष्य के काम के लिए सहायक होगा।



थायरॉइड विकार का शीघ्र इलाज के लिए समुद्री प्राकृतिक उत्पाद

एक समय जब स्वास्थ्य देखभाल उद्योग विभिन्न बीमारियों के लिए समुद्री व्युत्पन्न जैव-सक्रिय यौगिकों पर निर्भर हो रहा है, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) ने जल्द ही थायरॉइड विकार का इलाज करने के लिए समुद्र से प्राप्त प्राकृतिक उत्पाद प्रमोचन करेंगे। सीएमएफआरआई ने पहले ही समुद्री शैवाल और हरी शंबुक से मधुमेह, आर्थाइटिस और कोलेस्ट्रॉल के लिए न्यूट्रास्यूटिकल उत्पादों को विकसित किया है।

सीएमएफआरआई द्वारा समुद्री जीवों से दवा निकालने हेतु युवा शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए आयोजित तीन साप्ताहिक शीतकालीन विद्यालय के समापन समारोह में, डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सीएमएफआरओ ने कहा कि थायरॉइड विकार के लिए संस्थान द्वारा विकसित समुद्री न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद नैदानिक परीक्षण के अंतिम चरण है। “उत्पाद का व्यावसायीकरण नैदानिक परीक्षण के सफल पूर्ति के बाद किया जाएगा”, उन्होंने कहा। डॉ. गोपालकृष्णन ने यह भी कहा - इसके अलावा, सीएमएफआरआई समुद्री जीवों से कॉस्मिक्व्यूटिकल्स सहित ऐसे कई प्राकृतिक उत्पादों का विकास करेंगे। उन्होंने कहा, “संस्थान के प्रयोगशालाओं में विकसित प्राकृतिक समुद्री उत्पादों का व्यावसायीकरण करने के लिए सीएमएफआरआई ने उद्योग के साथ विचार-विमर्श की संभावनाओं की तलाश करेंगे।

उन्होंने कहा कि “समुद्री जीवों से उच्च मूल्य वाले जैव सक्रिय मेटाबोलाइट्स ‘समुद्री प्राकृतिक’ मूल के नए यौगिकों की बढ़ती माँग के कारण इसका ध्यान आकर्षित कर रहे हैं, जो फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में इसका संभावित अनुप्रयोग हैं। कार्यात्मक खाद्य पदार्थ, प्राकृतिक सामाग्री से समृद्ध है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद साबित हुए हैं।” “सीएमएफआरआई विभिन्न बीमारियों के खिलाफ एक आशाजनक चिकित्सीय एजेंट के रूप में समुद्री जीवों से बयोएक्टिव अणु की खोज के सीमांत क्षेत्र में कार्य करने वाले भारत के एक अग्रणी समुद्री अनुसंधान है।” डॉ. गोपालकृष्णन

ने कहा कि सीएमएफआरआई द्वारा विकसित चार न्यूट्रास्यूटिकल उत्पादों ने स्वास्थ्य बाज़ार में भारी माँग हासिल की है।

सीएमएफआरआई के समुद्री जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा 23 वैज्ञानिकों और शिक्षकों को समुद्री जीवों से बयोएक्टिव यौगिकों के हाल के प्रगति और बहत्तर स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए उच्च मूल्य वाले उत्पादों का विकास पर प्रशिक्षित करने के लिए 21 दिवसीय शीतकालीन विद्यालय आयोजित किया था। दुनिया के विभिन्न भागों से प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और विशेषज्ञ, जो समुद्री प्राकृतिक उत्पाद रसायन शास्त्र के क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं, समुद्री बयोएक्टिव यौगिकों के क्षेत्र में व्याख्यान दिया और व्यावहारिक कक्षाएँ आयोजित कीं।

शीतकालीन विद्यालय के समापन समारोह के मुख्यातिथि डॉ. टी. के. श्रीनिवासा गोपाल, केंद्रीय मात्स्यिकी तकनीकी संस्थान (सीआईएफटी) के भूतपूर्व निदेशक थे। उन्होंने कहा कि भारतीय उपमहाद्वीप के समुद्री और तटीय आवासों में वनस्पति जात और प्राणी जात की समृद्ध विविधता अभी भी मूल्यवान दवा और बायोमेडिकल उपयोग सहित बयोएक्टिव यौगिकों का एक अप्रयुक्त संग्रह है।

उन्होंने कहा- “यहाँ तक कि समुद्री जीवों के इन समूहों का कम उपयोग किया है, पिछले दशक के दौरान नए यौगिकों में बयोएक्टिव यौगिकों का औसत अनुपात में गिरावट हुई है। समुद्री जीवों से उत्पन्न विभिन्न औषधीय और जैव औषधीय उत्पाद से मानव स्वास्थ्य के लिए इसका असंख्य लाभ होता है। अतः वे खाद्य और दवा उद्योग के लिए आकर्षक विकल्प बनाते हैं। डॉ. पी विजयगोपाल, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख और डॉ. काजल चक्रवर्ती, शीतकालीन विद्यालय के पाठ्यक्रम निदेशक ने इस अवसर पर भाषण दिया।



PRAWN FEED



VANNAMEI FEED



BLACK TIGER SHRIMP FEED



BLACK TIGER SHRIMP FEED

AVANTI FEEDS LIMITED

In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company

Aiding sustainability & reliability to Aquaculture



Shrimp Hatchery



Feed Plant - Gujarat



Prawn Feed & Fish Feed



Prawn Processing & Exports

INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN

- GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
- LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY

AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS

AVANTI A.H.C.P. RANGE



IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD.,
Thailand.



Chelated Trace Mineral Supplement

Avant Bact
Aiding Sustainability & Reliability to Aquaculture

Gut Probiotic



Marine Mineral

Avant AmmoniAbsorb
AIDING SUSTAINABILITY & RELIABILITY TO AQUACULTURE

Ammonia Absorber

Avant D-Flow

Water Quality Improver

Avant Life

Oxy-Generator

Avant ProW
Aiding Sustainability & Reliability to Aquaculture

Soil & Water Probiotic

Avant Immupak
Aiding Sustainability & Reliability to Aquaculture

Immunity Enhancer

Avant Catcher 1
AIDING SUSTAINABILITY & RELIABILITY TO AQUACULTURE

Corporate Office: **Avanti Feeds Limited**

G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com

Regd. Office: **Avanti Feeds Limited.**

H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.



Innovative safeguards against complex risk

At Integro, we understand the risks involved with Seafood. We are committed to simple solutions to complex risks through our expertise.

Protect yourself with bespoke Rejection/Transit Insurance solutions from Integro Insurance Brokers.

Contact us to experience our expertise:

Raja Chandnani

Phone: +44 20 74446320

Email: Raja.Chandnani@integrogroupp.com

www.Integrouk.com

INTEGRO / UK
INSURANCE BROKERS